राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वतत्रंता दिवस समारोह-2020

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 27 विक्रम सम्वत्-2077 सन् -2020

संरक्षक
श्री प्रमोद कुमार सिंह
मुख्य आयुक्त

प्रधान सम्पादक
श्री महेन्द्र पाल
आयुक्त

प्रबन्ध सम्पादक
श्री मंजूर अली अंसारी
अपर आयुक्त

सम्पादक
श्री सुभाष चन्द्रा
सहायक आयुक्त

कार्यकारी सम्पादक दल
श्री विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक
श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवादक
श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवादक
श्री हरकेश कुमार मीना, कनिष्ठ अनुवादक
श्री मानसिंह गुर्जर, कर-सहायक

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. संदेश 3–6
2. संरक्षक की कलम से 7
3. प्रधान सम्पादक की कलम से 8
4. संदेश 9–14
5. प्रबन्ध सम्पादक की कलम से 15
6. सम्पादक की कलम से 16
7. विभागीय अतिथिगृह का लोकार्पण 17
8. राजभाषा नीति के अनुसार राज्यों का वर्गीकरण 18
9. 33वाँ अखिल भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 19–23
10. बाप 24
11. मेरा घोंसला 24
12. जाने कैसी कसक मची थी, जाने कैसी प्यास थी 25
13. अन्तर्राष्ट्रीय सीम शुल्क दिवस–2020 26–27
14. बाल चित्रकारी 27
15. अन्तर्राष्ट्रीय सीम शुल्क दिवस–2020 28–29
16. महिला सशक्तिकरण 30
17. तपस्या 31–33
18. तुम्हारे प्रतीक 34
19. रामगढ़ के गोले 35–36
20. जी ले ज़रा 36
21. कहानी सुवर्णा और हिमनद की 37
22. यम से संवाद 38
23. कोविड–19 : अभिशाप नही वरदान है 39
24. काले बादल 40
25. कोरोना काल 40
26. जीएसटी दिवस समारोह–2020 41–42
27. प्रायश्चित 43–45
28. 'माँ' कोई शरीर नहीं 46
29. पापा तेरी ज़रूरत है 46
30. अनुसंधान : कुछ बिंदु 47–50
31. जिंदगी 51
32. रावण के पुतले का संवाद 51
33. पहला सुख निरोगी काया 52
34. सृष्टि–चक्र 53
35. गिरेबाँ 53
36. राजभाषा पखवाड़ा–2019 : एक रिपोर्ट 54–56
37. राजभाषा समारोह –2019 57–58
38. राजभाषा पुरस्कार 59–62
39. फ़ैसला जीवन का 63–64
40. वो कौन थी? 65
41. कोरोना काल 65
42. टूटते रिश्ते और हम 66–67
43. दृढ़ निश्चय 67
44. ऊटपटाँग शिक्षा और ऊटपटाँग शिक्षक 68–69
45. बहनों की टोली 69
46. नासिन 69
47. बाल चित्रकारी 70– 72

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर व सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारी संवैधानिक आवश्यकता है। हिंदी में कार्य करने से जहां राजभाषा नीति का सफल कार्यान्वयन एवं प्रचार- प्रसार होगा वहीं राजभाषा हेतु निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति में अमूल्य योगदान मिलेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूं।

अजित कुमार

(एम. अजित कुमार)

सत्यमेव जयते

सदस्य
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों पर गर्व है जिन्होनें अपनी मौलिक एवं रचनात्मक प्रतिभा का परिचय का देते हुए इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना बेहतर योगदान दिया है।

इस जोन द्वारा पत्रिका का नियमित प्रकाशन करके राष्ट्रभाषा के प्रति अपने प्रेम एवं दायित्वों को प्रदर्शित करके सराहनीय कार्य किया है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं है कि 'राजप्रभा' रूपी पुष्प हमेशा अपनी महक बिखेरता रहे।

(संगीता शर्मा)

सत्यमेव जयते

सदस्य
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के इस अंक के प्रकाशन पर मुझे आत्मिक आनंद की अनुभूति हो रही है। नियमित रूप से हिंदी विभागीय पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि तथा रूझान का प्रतीक है।

हिंदी भाषा हमारी अस्मिता की पहचान के साथ-साथ साहित्य व प्रशासन की भाषा है। यह भाषा विज्ञान एवं तकनीकी के साथ-साथ प्रत्येक विषय व विधा को अभिव्यक्त तथा व्याख्यायित करने में पूर्ण सक्षम है।

मेरी हार्दिक कामना है कि राजप्रभा का यह अंक भी पूर्व अंकों की तरह अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।

अजय जैन

(अजय जैन)

सत्यमेव जयते

सदस्य
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर व सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 27वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी प्रकार विभागीय पत्रिका भी विभाग का दर्पण होती है जो विभाग के अधिकारियों में छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभा तथा उनके राजभाषा के अगाध प्रेम को उजागर करती है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा करता हूं कि हिंदी अपनी खुशबू से पूरे विश्व को महकाए।

वि. जौहरी

(विवेक जौहरी)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर (जयपुर जोन)
जयपुर

संरक्षक की कलम से

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर व सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा प्रकाशित की जाने वाली विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के पिछले अंक में प्रधान संपादक के रूप में जुड़कर शुरू किया गया मेरा यह सफर वर्तमान में इस अंक के संरक्षक तक पहुँचना बहुत ही सुहावना व अविस्मरणीय रहा है ।

हिंदी पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य राजभाषा का सहज एवं सरल प्रयोग करते हुए विभागीय कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देना है। अपने इस उद्देश्य के पूर्ण निर्वहन के साथ-साथ यह पत्रिका सभी आयुक्तालयों के कार्मिकों में परस्पर अंतर-कार्यालयी संपर्क को भी बखूबी बढ़ा रही है। भाषा संप्रेषण के सहज उपलब्ध माध्यम के रूप में हिंदी गृह पत्रिकाओं की पहुँच कार्यालय के प्रत्येक कार्मिक तक होती है। किसी भी देश की भाषाएँ उस देश की सभ्यता व संस्कृति की जीवंतता का प्रतीक होती हैं और हिंदी भी इन सभी पहलुओं को अपने अंदर खूबसूरती से समाहित करके भारतीय संस्कृति को निरंतर समृद्ध कर रही है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देते हुए मैं आशा करता हूँ कि राजप्रभा रूपी दीपक निरंतर प्रकाशित व देदीप्यमान रहकर अपने उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करता रहे।

(प्रमोद कुमार सिंह)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर/
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

विभागीय हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन में प्रधान संपादक के रूप में प्रथम प्रयासस्वरूप 'राजप्रभा' का 27वाँ अंक आप सभी को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हमारे कार्यालय के लिए गर्व एवं गौरव का विषय है।

इस कार्यालय के अधिकतर अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में प्रवीण हैं तथा राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों की अनुपालना करते हुए सभी कार्मिकों द्वारा अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इस समय इस बात की भी आवश्यकता है कि ई-ऑफिस में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाए तभी कार्यालय में व्यवहारिक रूप से हिंदी का प्रयोग संभव हो सकेगा।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि एक आदर्श पत्रिका के सभी गुण इस पत्रिका में प्रतिबिम्बित होंगे और पत्रिका का यह अंक भी सभी सुधी पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। इन्हीं उम्मीदों के साथ...

(महेन्द्र पाल)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर
अलवर

संदेश

मुझे इस बात की अपार खुशी है कि विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का अनवरत प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी को गौरवपूर्ण एवं गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित बनाए रखने में विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों का जो प्रयास और उत्साह रहता है उसे शब्दों में अभिव्यक्त करना उनके प्रयासों को एक सीमा में बांधने जैसा है।

पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्र प्रकाश गोयल

(चन्द्र प्रकाश गोयल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील
जोधपुर

संदेश

यह बेहद खुशी की बात है कि विभाग में राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका की प्रगति एवं निरंतर विकास की कामना करते हुए मैं यह अपेक्षा करता हूँ कि हम सब हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का ही प्रयोग करेंगे।

मैं इस पत्रिका के सफल संपादन के लिए अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

सी.आर. मीना

(सी.आर. मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जोधपुर/
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जोधपुर

संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर व सीमा शुल्क, जयपुर जोन द्वारा विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का आगामी अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत एक विशाल देश है जहां पर विचार विनिमय तथा कामकाज हेतु अनेक भाषाओं व बोलियों का प्रयोग किया जाता है और इन सभी कार्यों में हिंदी विभिन्न प्रांतों के भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों को आपस में जोड़ने का कार्य बखूबी करती है।

इस संदेश के माध्यम से मेरी यह शुभकामनाएं है कि पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रकार अनवरत जारी रहे।

आलोक

(आलोक गुप्ता)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर
मुख्यालय–जयपुर

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर व सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय पत्रिका ''राजप्रभा'' के 27वें अंक का प्रकाशन इस बात का प्रतीक है कि यहां के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति काफी उत्साह और लगाव है।

वर्तमान युग सूचना व प्रौद्योगिकी एवं इंटरनेट का युग है और सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में ई–मेल, सोशल मीडिया, विज्ञापनों एवं मीडिया आदि सभी जगह हिंदी का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में राजभाषा नए युग की अपेक्षाओं के अनुरूप ढलते हुए उत्कृष्ट विकास हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रयासरत है।

मैं सभी वर्ग के अधिकारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों के साथ–साथ संपादक मंडल को अपनी बधाई देता हूँ।

(सुभाष चन्द्र अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील
जयपुर

संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी नवीन शब्द रचना की दृष्टि से विलक्षण है एवं अन्य भाषाओं एवं बोलियों आदि के शब्द लेने में संकोच नहीं करती है। हिंदी के इसी गुण के कारण इसका साहित्य बहुत समृद्धशाली है। पत्रिका प्रकाशन का मुख्य ध्येय पत्रिका में छपी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना एवं इसके प्रयोग के प्रति जागरूकता विकसित करना है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

(सुग्रीव मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
उदयपुर

संदेश

विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के इस अंक से जुड़ना मेरे लिए बहुत ही गौरव की बात है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्यक्ति, संस्कृति, समाज एवं देश को जोड़ने का भाषा एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। मेरा मानना है कि इस तरह विभागीय पत्रिकाओं के प्रकाशन से जहां एक ओर सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलता है वहीं विभाग के सभी वर्ग के अधिकारियों में छिपी हुई रचनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा भी मुखरित होती है।

पत्रिका प्रकाशन में संपादक मंडल एवं रचनाकारों ने जो प्रयास किया है उसके लिए सभी को हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

(डॉ. बच्चू सिंह मीना)

सत्यमेव जयते

अपर आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

विभागीय गृह पत्रिका 'राजप्रभा' के प्रकाशन के प्रबंध संपादक के रूप में मेरा प्रथम प्रयास आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र की पहचान है और इसी पहचान के विकास और प्रयोग-प्रसार का दायित्व संविधान द्वारा हम सभी को सौंपा गया है। इसी कड़ी को समृद्ध करते हुए नियमित रूप से इस गृह-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा की अलौकिक ज्योति को निरंतर जलाए रखने के लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सदैव प्रयत्नशील हैं।

इस पत्रिका में आयुक्तालय की विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ सभी वर्ग के अधिकारियों द्वारा रचित विविध सामग्रियों को समाविष्ट किया गया है। मैं लेखकों तथा उनके परिवारजनों को शुक्रिया अदा करता हूँ तथा उनकी सृजनशीलता व रचनात्मकता की प्रशंसा करता हूँ जिन्होनें विविध रचनाएं एवं चित्र आदि भेजकर राजप्रभा को समृद्ध किया है।

मुझे यह भी आशा है कि राजप्रभा के इस अंक से अन्य कर्मचारी भी प्रेरित होंगे तथा नए लेखकों का भी सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सभी पाठकों का भी आभार प्रकट करते हुए निवेदन है कि वे अपने अमूल्य सुझाव भेजते रहें ताकि आगामी अंको को और सुरूचिपर्ण बनाने में हमें सहयोग मिलता रहें।

इस पत्रिका के माध्यम से अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि

'हिंदी केवल भाषा नहीं यह भावों की अभिव्यक्ति है।
यह मातृभूमि पर मर मिटने की भक्ति है ।।

(मंजूर अली अंसारी)

सत्यमेव जयते

सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, आयुक्तालय
जयपुर

संपादक की कलम से

हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन का मूल उद्देश्य राजभाषा नीति के साथ-साथ रचनाकारों को प्रोत्साहित करना है। यह मेरे लिए सुखद आश्चर्य है कि हमारे विभाग में उच्च कोटि की साहित्यिक प्रतिभाएं हैं जिनकी सजीव लेखनी एवं सहयोग से 'राजप्रभा' के इस अंक को सजाने की मेरी एक छोटी सी कोशिश आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि यह प्रयास आप सभी को पसंद आएगा।

इस पत्रिका में विभागीय अधिकारियों के साथ-साथ उनके परिवारजनों को भी प्रोत्साहित करने की कोशिश हैं जो भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी में स्वरचित रचनाओं के माध्यम से स्वयं को सहज रूप से अभिव्यक्त करते हुए राष्ट्र की आवाज बने। सभी रचनाकार साधुवाद व बधाई के पात्र है।

वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिया गया सहयोग मेरे लिए सम्मानजनक एवं प्रेरणादायक है। महिला अधिकारियों सुश्री पारूल सिंघल, उपायुक्त, सुश्री शालिनी वर्मा, अधीक्षक, सुश्री ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक तथा सुश्री रचना सुधीर, अधीक्षक ने भी अपनी मौलिक प्रतिभा से पत्रिका में चार चाँद लगाए है।

श्री विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक का लेख 'अनुसंधान: कुछ बिंदु' उनकी अनुसंधान से संबंधित विषयात्मक जानकारी से भरपूर एक महत्त्वपूर्ण आलेख है। निश्चित रूप से सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण इससे लाभान्वित होंगे। श्री दीपक पंजाबी, अधीक्षक द्वारा रचित रचनाओं में से 'रामगढ़ के गोले' आप सभी पाठकों को हँसने के लिए मजबूर करेगी।

अधिकारियों व कर्मचारियों की स्वरचित रचनाओं के साथ-साथ विभागीय गतिविधियों को भी इस अंक में शामिल किया गया है। मार्च, 2020 में जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम को सचित्र झलकियों के साथ पत्रिका में प्रस्तुत करने के लिए श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवादक बधाई के पात्र है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर भी इस समारोह में प्रस्तुत किए गए विभिन्न कार्यक्रमों को आपके समक्ष पहुँचाने की कोशिश की गई है। निश्चित रूप से आप सभी को यह पसंद आएगा।

राजप्रभा के संरक्षक श्री प्रमोद कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त ने अपने गरिमामयी संरक्षण, मार्गदर्शन एवं नेतृत्व से पत्रिका के इस अंक में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विभाग की ओर से आपका सादर आभार एवं कृतज्ञता।

प्रधान संपादक श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त का मार्गदर्शन भी हमेशा प्रेरक के रूप में साथ रहा। उनके मार्गदर्शन की स्निग्ध छाया दुर्गम को भी सुगम बना देती है। राजप्रभा परिवार आपका भी कृतज्ञ एवं आभारी है।

पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त जिनके सहयोग एवं प्रयास से कठिनाइयाँ, कठिनाइयाँ नहीं रही। उन्हीं की परिकल्पना, मार्गदर्शन एवं अप्रतिम लेखनी के सहयोग से 'राजप्रभा' का यह अंक आपके सम्मुख है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि पत्रिका के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु भविष्य में भी वरिष्ठ अधिकारियों का इसी तरह प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा। सभी पाठको एवं रचनाकारों के अमूल्य सुझावों, प्रतिक्रियाओं व सकारात्मक मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में ...

(सुभाष चन्द्रा)

जवाहर नगर, जयपुर स्थित
विभागीय अतिथि गृह का लोकार्पण कार्यक्रम

भारत सरकार की राजभाषा नीति के तहत् भाषाई दृष्टिकोण से भारत के राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों का क्षेत्रवार विभाजन

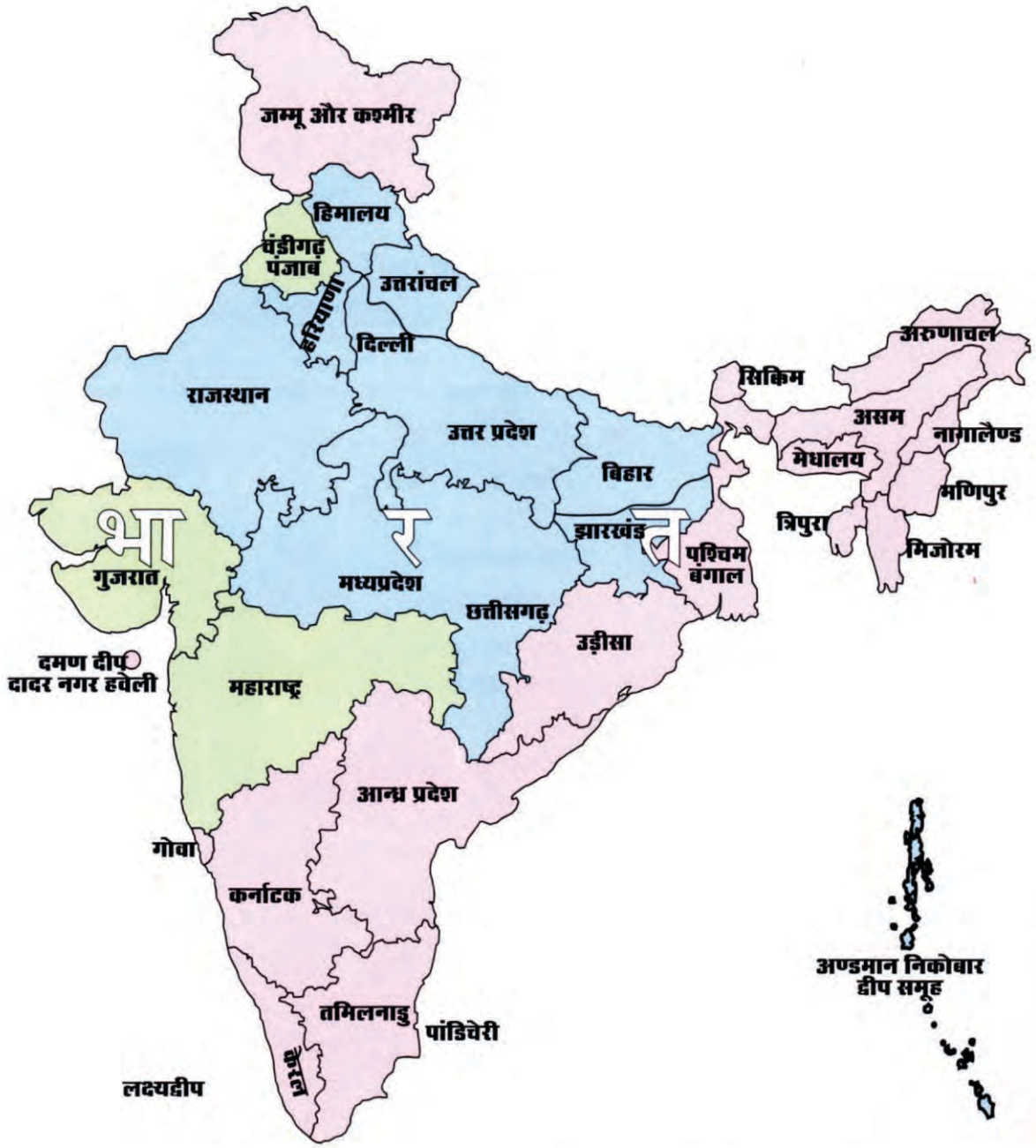

- ☐ 'क' क्षेत्र – छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तथा अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह।
- ☐ 'ख' क्षेत्र – महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब तथा चंडीगढ़।
- ☐ 'ग' क्षेत्र – केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, गोवा, पाण्डिचेरी, दमण द्वीप, लक्ष्यद्वीप, जम्मू और कश्मीर, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम तथा मणिपुर।

33वाँ अखिल भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम

केंद्रीय राजस्व खेलकूद एवं सांस्कृतिक बोर्ड (सी.आर.एस.सी.बी.), नई दिल्ली के तत्वावधान में तथा कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर जोन के संरक्षण में 33वें अखिल भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन कार्यालय आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर द्वारा दिनांक 06.03.2020 एवं 07.03.2020 को बी.एम. बिड़ला ऑडिटोरियम, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर के प्रेक्षागृह में आयोजित किया गया।

समारोह के उद्घाटन के शुभ अवसर पर पदम्श्री पुरस्कार विजेता श्री अहमद हुसैन मुख्य अतिथि तथा श्री मौहम्मद हुसैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मंच पर हुसैन बंधुओं के अलावा श्रीमती सुनीता बैंसला, प्रधान आयुक्त, आयकर विभाग, जयपुर, श्रीमती सिम्मी जैन, अपर महानिदेशक, नासिन, जयपुर तथा श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, सीजीएसटी, जयपुर विराजमान थे।

भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के अनुसार कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ श्रीमती सुनीता बैंसला, प्रधान आयुक्त, आयकर, जयपुर तथा मंच पर उपस्थित महानुभावों द्वारा की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अहमद हुसैन का स्वागत श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, सीजीएसटी, जयपुर द्वारा किया गया। सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न भी प्रदान किये गये।

कार्यक्रम के दौरान अपने स्वागत भाषण में श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, सी.जी.एस.टी., जयपुर ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम हमारे दैनिक कार्यकलापों तथा नीरस जीवन शैली में विविध रंगों को समाविष्ट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि मनुष्य अपने जीवन में प्रयोजन को समाविष्ट करें तो आयोजन अपने-आप सफल हो जाएगा। किसी भी प्रतिस्पर्धा में हार या जीत महत्त्वपूर्ण नहीं होती है, बल्कि उसमें भाग लेने की प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण होती है। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने का सुख

अशोक कुमार बिरानियां
वरिष्ठ अनुवादक,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर,
आयुक्तालय, जयपुर

बड़ा ही आनंददायक होता है और इससे हमारे जीवन को एक नई उमंग और नई दिशा मिलती है।

स्वागत भाषण के बाद सभी के द्वारा राष्ट्रगान गाया गया। इसके बाद प्रतियोगिताओं का आगाज नार्थ जोन की टीम सीजीएसटी, दिल्ली द्वारा प्रस्तुत हिंदी नाटक से किया गया। इस दो दिवसीय महोत्सव में कुल 13 कार्यक्रमों म्यूजिक वोकल (लाइट) हिंदुस्तानी, म्यूजिक वोकल (क्लासिक) हिंदुस्तानी, म्यूजिक वोकल (लाइट) कर्नाटिक, म्यूजिक वोकल (क्लासिक) कर्नाटिक, इस्ट्रूमेंटल (लाइट), इस्ट्रूमेंटल (क्लासिक), कर्नाटिक म्यूजिक इंस्ट्रूमेंटल (लाइट), कर्नाटिक म्यूजिक इंस्ट्रूमेंटल

(क्लासिक), एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, सामूहिक लोक गान, नाटक (क्षेत्रीय/अंग्रेजी) तथा नाटक (हिंदी) की

प्रतिस्पर्धाएं हुई।

इस महोत्सव का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र दिनांक 06.03.2020 को आयोजित हुई सांस्कृतिक संध्या थी। सांस्कृतिक संध्या में श्री अहमद हुसैन एवं श्री मोहम्मद हुसैन में अपनी मनमोहक गजलों तथा प्रस्तुतियों से सभी दर्शकों का मन मोह लिया। जाने माने सिंगर श्री रविन्द्र उपाध्याय जी ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। मस्ती भरे अंदाज में सभी दर्शकों ने इस सांस्कृतिक संध्या का भरपूर आनंद लिया।

इस सांस्कृतिक समारोह में आयोजित प्रतियोगिताओं में निर्णायकों की भूमिका विख्यात विद्वानों ने बखूबी निभायीं।

इस सांस्कृतिक महोत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नानुसार है :-

क्र.सं.	श्रेणी	प्रतिभागी का नाम	जोन का नाम	पुरस्कार
1.	सुगम संगीत हिंदुस्तानी	सुश्री नीलिमा खोर	आयकर दिल्ली (नार्थ ज़ोन)	विजेता
		श्री राजीब चटर्जी	सीमा शुल्क कोलकाता (ईस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
2.	शास्त्रीय संगीत हिंदुस्तानी	सुश्री रीना मंडल	आयकर कोलकाता (ईस्ट ज़ोन)	विजेता
		श्री मुकेश कुमार	आयकर दिल्ली (नोर्थ ज़ोन)	उप-विजेता
3.	वाद्य सुगम संगीत	श्री टी.एन. निशांत	सीमा शुल्क केरल (साउथ ज़ोन)	विजेता
		श्री जी.एन. त्रिवेदी	आयकर अहमदाबाद (वेस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
4.	वाद्य शास्त्रीय संगीत	श्री प्रबीर कुमार कुंडु	आयकर कोलकाता (ईस्ट ज़ोन)	विजेता
		श्री अशोक चौधरी	सीजीएसटी कोलकाता (ईस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
5.	गायन कर्नाटिक सुगम	श्री पी.के. जयशंकर एय्यर	सीजीएसटी नासिक (वेस्ट ज़ोन)	विजेता
		श्री उमा महेश्वर राय	सीजीएसटी तमिलनाडु एवं तेलंगाना	उप-विजेता
6.	गायन शास्त्रीय कर्नाटिक	श्री सुब्बा राजू	सीमा शुल्क तमिलनाडु (साउथ ज़ोन)	विजेता
		श्री रेणुका मेनन	सीजीएसटी मुम्बई (वेस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
7.	सुगम वाद्य यंत्र कर्नाटिक	श्री केशव रमन	सीमा शुल्क तमिलनाडु (साउथ ज़ोन)	विजेता
		श्री जितेन्द्र कवाटी	सीमा शुल्क मुम्बई (वेस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
8.	शास्त्रीय वाद्य यंत्र कर्नाटिक	श्री बी.टी. केशवरमन	सीमा शुल्क तमिलनाडु (साउथ ज़ोन)	विजेता
9.	एकल नृत्य	श्री सुब्बा राजू	सीमा शुल्क तमिलनाडु (साउथ ज़ोन)	विजेता
		सुश्री चैती भट्टाचार्या	सीजीएसटी कोलकाता (ईस्ट ज़ोन)	उप-विजेता
10.	सामूहिक नृत्य	आयकर आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना	साउथ ज़ोन	विजेता
		आयकर मुम्बई	वेस्ट ज़ोन	उप-विजेता
11.	सामूहिक लोक गान	आयकर आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना	साउथ ज़ोन	विजेता
		आयकर दिल्ली	नोर्थ ज़ोन	उप-विजेता
12.	क्षेत्रीय/अंग्रेजी नाटक	आयकर मुम्बई	वेस्ट ज़ोन	विजेता
		आयकर कानपुर	नोर्थ ज़ोन	उप-विजेता
13.	हिंदी नाटक	आयकर मुम्बई	वेस्ट ज़ोन	विजेता
		आयकर कोलकाता	ईस्ट ज़ोन	उप-विजेता
सम्पूर्ण कार्यक्रम की विजेता टीम				**साउथ ज़ोन**
सम्पूर्ण कार्यक्रम की उप-विजेता टीम				**वेस्ट ज़ोन**

कार्यक्रम के समापन समारोह में श्रीमती नीना निगम, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, जयपुर तथा श्री प्रमोद कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा उत्पाद शुल्क, जयपुर उपस्थित रहे।

श्रीमती नीना निगम ने अपने समापन सम्बोधन में सभी विजेताओं को बधाई दी।

इस दो दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों को विभिन्न बैंकों तथा सरकारी उपक्रमों द्वारा प्रायोजित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रायोजकों ने तीन श्रेणियों प्लेटिनम, गोल्ड, सिल्वर में अपना योगदान दिया था। प्लेटिनम प्रायोजक किसी एक कार्यक्रम के प्रायोजक रहे तथा कार्यक्रम में प्रमुख जगहों पर इनके कार्यालय के लोगो का प्रदर्शन किया गया था। गोल्ड श्रेणी के प्रायोजक किसी एक कार्यक्रम के सह प्रायोजक रहे तथा इनके कार्यालय के लोगो का प्रदर्शन भी प्रमुख जगहों पर किया गया। सिल्वर प्रायोजक के केवल लोगो का प्रदर्शन प्रमुख जगहों पर किया गया।

कार्यक्रम के अंत में श्री मंज़ूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, सीजीएसटी, जयपुर ने धन्यवाद ज्ञापन में सभी का आभार व्यक्त किया।

इस सांस्कृतिक समारोह में दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, कानपुर, अहमदाबाद, लखनऊ, तमिलनाडु, वडोदरा, पुणे, नासिक तथा केरल राज्यों में स्थित आयकर विभाग, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर विभाग तथा सीमा शुल्क के लगभग 270 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस सांस्कृतिक समारोह के आयोजन सचिव श्री मंज़ूर अली अंसारी, अपर आयुक्त तथा मुख्य संयोजक श्री एच.आर. मुंडेल, अधीक्षक सहित अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने पूर्ण मनोयोग से कार्यक्रम की सफलता में अपना योगदान दिया।

इनके अथक प्रयासों से ही समारोह बहुत ही भव्य एवं सुरुचिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ।

इस सांस्कृतिक समारोह में केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर, सीमा शुल्क, जयपुर के अलावा आयकर विभाग, जयपुर एवं नासिन, जयपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित मीडियाकर्मी भी उपस्थित रहे।

बाप

मंजूर अली अंसारी,
अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु
एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

वह अपने आंसूओं को घर में सबसे छुपाता है,
वह बाप है जो बाहर ठोकर खा कर भी मुस्कुराता है।

अपने बच्चों की खातिर न जाने कितने गम उठाता है,
जरुरत आन पड़ने पर वह तूफानों से भी टकराता है।

अपने नन्हें परिंदों के लिए ख़्वाब का तिनका सजाता है,
हर मुश्किल को सह उनके वह घरौंदे बचाता है।

अपने कुर्ते के पीछे वह अपना पैबन्द छुपाता है,
बच्चों के वास्ते दिन-रात वह पसीना बहाता है।

जब बच्चे राह से भटके तो वह सही रास्ता दिखाता है,
कभी सख्तियों से भी अपनी उन्हें उनकी मंजिल दिखाता है।

नाकामियों से बच्चों को उम्मीद का ढाढ़स बँधाता है,
हर हाल में उन्हें लड़ने का अपना हुनर सिखाता है।

भले ही रात में बैचेनी से करवट बदलता है,
पर औलाद को अपने नरम बिस्तर पर सुलाता है।

बचाने इज्जत के खातिर अपनी पगड़ी बिछाता है,
अपनी लाडली को जान की डोली में बिठाता है।

वह बाप है जो अपना हर फर्ज निभाता है,
जिम्मेदारियों की भट्टी में रोज अपने को जलाता है।

❑❑

मेरा घोंसला

रचना सुधीर, अधीक्षक,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर
आयुक्तालय, जयपुर

पापा जी आप बिन ये जीवन वीराना है
जिन्दगी का सफर नहीं सुहाना है।
आप थे तो सरल थी जीवन की डगर
ज़िंदा हूँ खुश नहीं हूँ मगर
बहुत याद आता है आपका कहना
डरती क्यों है, मैं हूँ ना।
क्यूँ मुझे साथ न ले गए
इस निरर्थक जीवन में
क्यूँ मुझे छोड़ गए
सब कुछ सहने को हो के मजबूर।
आप थे तो दिल में हौंसला था
आपके रहते मेरा भी एक घोंसला था
आपके बिना बिन आस की पंछी हूँ
सर पर आपके हाथ को तरसती हूँ।
ईमानदारी मेहनत और दृढ़ता है आपकी देन
हूँ आपके बिना बेचैन
आपके घरौंदे की थी एक गौरेया
अब तो हूँ एक अवांछित चिड़िया।
याद हैं बचपन के सभी खिलौने
हैं सब क़ैद...यादें तस्वीरें और स्वप्न सलोने
क्या करूँ कहाँ जाऊं
कैसे आपको वापस पाऊँ.....।

❑❑

जाने कैसी कसक मची थी, जाने कैसी प्यास थी

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जोधपुर

जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी
चल दिया अचानक अकेले
जाने किसकी आस थी
जो दिल में थी, मैं समझ न पाया
जाने कैसी अरदास थी
जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी...।

घुमड़-घुमड़ करते विचार
पर शब्द कहाँ मिल पाए थे
आँखे जाने क्या कहती थी
जो लब नहीं कह पाए थे
शब्द विहीन अरमां थे कुछ
ठंडी भारी श्वास थी
जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी...।

सूनी सूनी नज़रों ने,
जाने क्या सपने संजोये थे
हलचल सी मची थी अन्दर
पर अल्फाज़ जाने क्यों खोये थे
होठों पे मुस्कान ना आई
नैन क्यों रोये-रोये थे
जैसे दूर हो गयी हो मुझसे
चीज़ कोई जो खास थी
जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी...।

चलते-चलते दूर था निकला
छूटा शहर और छूटी डगर थी
जंगल था, भोली शाम थी
दूर हुआ विचारों का क्रंदन
आज फुरसत मेरी, मेरे नाम थी
हर सुविधा थी मिली यक़ीनन
हर जीत में फिर क्यूँ 'काश' थी
जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी...।

विचार शून्य होकर जब मैं,
खुद में वहां पर खोया था
पंछी करते थे बातें मुझसे
बादल ने जग को धोया था
बहते जल की मीठी कलकल,
बरसती हुई बौछार वो निर्मल
खुद कायनात जब मेरे पास थी
तो फिर कैसी, कसक मची थी
फिर क्यूँ, ये मीठी प्यास थी...।

शाम, समीर और रंगीन समां था
मेरा मन अब, इनमें रमा था
बादल बगिया, नदिया पहाड़
ऊँचे पेड़ और हरी हरी सी घास थी
जिनसे दूर हो विकल हुआ था
वो दुनिया अब मेरे पास थी
अब नहीं कसक बची थी
बची नहीं कोई प्यास थी...।

लेकर उसने रूप काव्य का
अपने पास बुलाया था
ऐसे में अंगड़ाई लेकर
शब्दों ने ग़दर मचाया था
अकेला घुटता हूँ सो
अल्फाजों ने साथ निभाया था
कविता का जिसे रूप मिला है
विश्वास मेरा, मेरी हर श्वास थी
कसक नहीं बची अब कोई
मेरी हर काश मेरा अरदास थी...।
ये कुदरत मेरी प्यास थी
जिसको कविता की आस थी
जाने कैसी कसक मची थी
जाने कैसी प्यास थी...।।

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस, 2020

डॉ. बी.के. मीना, संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

सीमा शुल्क सहयोग परिषद जिसे हम आज विश्व सीमा शुल्क संगठन के रूप में जानते हैं, के प्रथम अधिकारिक सम्मेलन की वर्षगांठ प्रतिवर्ष 26 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस के रूप में विश्व सीमा शुल्क संगठन (WCO) के सदस्य देशों में मनाई जाती है। विश्व सीमा शुल्क संगठन (WCO) द्वारा वर्ष 2020 को सीमा शुल्क विभाग द्वारा सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संबंधित आवश्यकताओं को केंद्र में रख कर सम्पूर्ण मानवता के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने में सीमा शुल्क विभाग द्वारा दिये जा रहे योगदान को समर्पित किया गया है।

आयुक्तालय, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर, मुख्यालय–जयपुर द्वारा दिनांक 27 जनवरी, 2020 को राजस्थान पुलिस अकादमी, शास्त्री नगर, जयपुर परिसर में स्थित सभागार में अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस–2020 का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री देवेंद्र भूषण गुप्ता, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार, विशिष्ठ अतिथि श्री राकेश कुमार शर्मा, प्रधान मुख्य आयुक्त, सीजीएसटी, जयपुर, जोन, श्रीमती सिम्मी जैन, अपर महानिदेशक, नासिन क्षेत्रीय परिसर, जयपुर, श्री हेमंत प्रियदर्शी, निदेशक, राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर तथा श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त, सीमा शुल्क, जयपुर मंच पर विराजमान रहे।

श्री डी.बी. गुप्ता, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार के कर–कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई। श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त, सीमा शुल्क, जयपुर ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि राज्य में वर्ष 2011–12 के दौरान मात्र 127.43 करोड़ रु. का राजस्व संग्रहण किया गया था जो कि सात वर्षों में 20 गुना बढ़कर 2570 करोड़ रु. पर पहुँच गया है। इसी तरह वर्ष 2018–19 में जयपुर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से सीमा शुल्क विभाग ने 8.43 करोड़ रु. मूल्य की विदेशी मुद्रा, सिगरेट और सोने की तस्करी के 49 मामले पकड़े गए।

मुख्य अतिथि महोदय ने विभाग की सराहना करते हुए कहा कि देश के विकास में योगदान के साथ–साथ अवांछित गतिविधियों को रोकने में भी विभाग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, खासकर राज्य से लगी पाकिस्तान सीमा पर। राजस्थान सरकार सीमा शुल्क विभाग की इस महत्त्वपूर्ण भूमिका को हमेशा से महसूस करती रही है। देश के विकास और सुरक्षा के लिए राजस्थान सरकार कस्टम विभाग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है और भविष्य में भी विभाग की हर संभव मदद के लिए तैयार रहेगी।

श्री राकेश कुमार शर्मा, प्रधान मुख्य आयुक्त, सीजीएसटी, जयपुर ने अपने सम्बोधन में कहा कि राज्य से हो रहे निर्यात और आयात को सरल तथा सुगम बनाने में कस्टम विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी बेहतर कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्र के विकास में सीमा शुल्क, राजस्थान के योगदान को प्रदर्शित करने वाली एक लघु फिल्म बढ़ते कदम का भी प्रदर्शन किया गया। इस फिल्म की सभी दर्शकों ने भरपूर सराहना की। इस कार्यक्रम में उत्कृष्ट सेवा के लिए अधिकारियों–कर्मचारियों व आयातकों–निर्यातकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में नासिन, जयपुर के निरीक्षकों द्वारा प्रस्तुत नाटक ''एक संवाद महात्मा के साथ'' ने सभी दर्शकों का मन मोह लिया। विभाग की महिला

अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी लोकनृत्य घूमर ने कार्यक्रम में विशेष समा बांध दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आयुक्तालय सीमा शुल्क के साथ-साथ मुख्य आयुक्त कार्यालय, अंकेक्षण, अपील, तथा DGGI के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भी सहभागिता की गई।

कार्यक्रम की स्मृतियों को चिर-स्थायी बनाये रखने के लिए मुख्य अतिथि महोदय तथा अन्य मंचासीन अतिथियों को स्मृति-चिह्न भेंट किए गए। कार्यक्रम में आमंत्रित सेवानिवृत्त अधिकारियों को भी कार्यक्रम की यादगार स्वरूप स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

डॉ. बिजेन्द्र कुमार मीना, संयुक्त आयुक्त द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदय तथा अन्य अतिथिगणों को कार्यक्रम में पधारने हेतु धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री सुनीता वर्मा, उपायुक्त द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम में विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी, केंद्र व राज्य सरकार के विभिन्न विभागों से पधारे अधिकारी व कर्मचारी, व्यापार जगत व पक्षधारक संस्थाओं के प्रतिनिधि और मीडिया कर्मी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम के उपरांत सभी ने लंच का आनन्द लिया।

❑❑

बाल चित्रकारी

सिद्धि शुक्ला
भतीजी सुश्री नीता शुक्ला,
वरिष्ठ अनुवादक

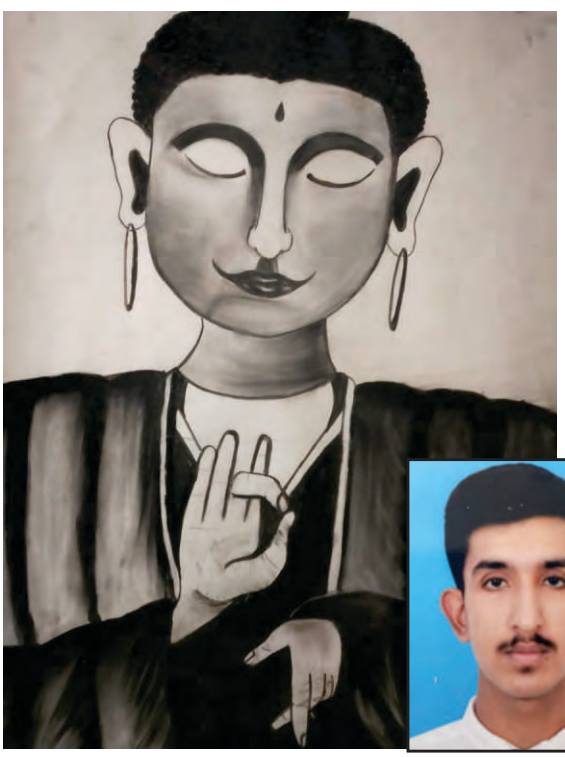

अर्पित गहलावत
पुत्र सुश्री नीरू गहलावत,
कार्यकारी सहायक

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस - 2020

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस - 2020

महिला सशक्तिकरण

डॉ. पारुल सिंघल, उपायुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

महिला सशक्तिकरण – एक बहुत प्रचलित जुमला है जिसे शायद ही कोई सही मायने में समझ पाया है। मेरे नज़रिये में महिला सशक्तिकरण जैसी कोई Lip Service की कोई आवश्यक्ता नहीं है, वह खुद ही इतनी पॉवरफुल है कि अपना रास्ता ख़ुद बना सकती है। एक महिला को उपयुक्त शिक्षा प्रदान करना, उसे financially independent बनाना ही महिला सशक्तिकरण नहीं है। ज़रूरत है उसके सपनों को जीने की, उसके पैशन को फ़ॉलो करने की आज़ादी देने की।

एक अच्छी शिक्षा सिर्फ इसलिए प्रदान करना कि उसे एक अच्छा वर मिल जाए या नौकरी करने की इजाज़त देना जिसमें कई शर्तें शामिल हों जैसे कि तय समय सीमा में घर लौट आना, अपने कार्य की वजह से घर और बच्चों की देख–भाल में कोई कमी न रहे इत्यादि। मेरे नज़रिये से यह महिला सशक्तिकरण क़तई नहीं है। उसे ज़रूरत है एक विश्वास की, एक साथ की जो उसके सपनों और इच्छाओं को किसी परिधि में सीमित न करे बल्कि उसे खुले आसमान में उड़ने की स्वतंत्रता दे।

इसी सन्दर्भ में मैं अपनी कहानी संक्षिप्त रूप से कहना चाहूँगी। मेरा जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। जिसकी छोटी–छोटी आशाएं एवं कुछ लिमिटेशन थीं। जिसकी आय का एकमात्र स्रोत पिताजी का मासिक वेतन था। उन्होनें अपनी दो बेटियों को उतना ही पढ़ा–लिखाकर सक्षम बनाया, जितना अपने बेटे को। मैनें भी लगन और मेहनत से हर परीक्षा में उच्च स्थान पाया एवं डॉक्टरी की पढाई पूरी की। इसी बीच विवाह हो गया तथा सरकारी मेडिकल कॉलेज में उच्च पद पर नौकरी मिल गई। परंतु मुझमें इससे भी आगे कुछ और करने का जोश था। फिर मैनें UPSC civil service exam clear करने का निश्चय किया। यह वह समय था जब मेरे पूरे परिवार ने मेरा समर्थन किया एवं मेरा मनोबल बढ़ाया। कई बार उनके मन में सवाल आया होगा कि इतनी अच्छी well settled life में अब क्या कमी रह गई है जो एक संघर्ष खड़ा कर दिया। परंतु कभी इस चीज़ को जताया नहीं। प्रथम प्रयास में परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और इसी बीच एक संतान को भी जन्म दे दिया। सर्विस ज्वाइन करने से पहले मेरे मन में कई सवाल आए कि क्या मैं सही कर रही हूं, 7 महीने के बच्चे के साथ यह नाइंसाफ़ी तो नहीं होगी जब मैं उसे छोड़कर एक वर्ष के लिए प्रशिक्षण लेने चली जाऊँगी। यह वह समय था जब मेरे परिवार ने मेरा हौंसला बढ़ाया कि मैंने जो यह पथ चुना है अब उससे पीछे नहीं लौटना है।

ट्रेनिंग ज्वॉइन करने के बाद भी इस दुविधा में रहती कि क्या मैं दोनों मोर्चों के साथ सम्पूर्ण न्याय कर पाऊँगी पर मन में विश्वास था कि बहुत लोग मेरे साथ हैं और उन्होंने भी यहाँ तक आने में मेरे साथ बहुत मेहनत की है। एकेडमी में हर क्लास अटेंड कीं, समस्त गतिविधियों में सहभागिता की और अपने बेटे को सम्भालने के लिए

लगभग हर सप्ताहांत फ़रीदाबाद से जयपुर का सफ़र किया। दोनों ही मोर्चों पर डटी रही। अनुशासन तथा कड़ी मेहनत की बदौलत एक साल का प्रशिक्षण पूरा किया एवं मुझे DG gold medal for best overall performance in batch से सम्मानित किया गया। मेरे कोर्स डायरेक्टर द्वारा बोले गए वो वाक्य कि पारुल पूरे बैच में सबसे मेहनती थी तथा इन्होंने कभी भी अपने बच्चे का एक्सक्यूज़ नहीं दिया। आज भी दिमाग़ में कौंधते हैं तो आँखें नम हो जाती हैं।

आज भी मेरी दिनचर्या एक आम गृहिणी जैसे ही शुरू होती है। घर सम्भालना, बेटे को तैयार कर स्कूल भेजना, नाश्ता बनाना, टिफ़िन लगाना। ऑफिस से घर आने के पश्चात बेटे के साथ खेलना, उसका होमवर्क करवाना तथा अन्य घरेलू कार्य करना आदि। पारिवारिक व ऑफिशियल दोनों जिम्मेदारियों के साथ कभी भी कोई समझौता नहीं किया।

अंत में बस यही कहना चाहूँगी कि नारी ख़ुद ही इतनी बलवान एवं सक्षम है कि उसे और सशक्तिकरण की बजाय थोड़ी स्वतंत्रता, विश्वास और एक अवसर दिया जाये।

मैं भी छू सकती हूँ आकाश,
मौक़े की है मुझे तलाश।

❑❑

तपस्या

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

श्रीधर मिश्र आज ही किसी कॉन्फ्रेंस के सिलसिले में इस शहर में आए थे और शहर के इस नामी होटल में रुके हुए थे। आयोजक उन्हें लेने आने वाले थे, अत: रिसेप्शन पर बैठकर उनका इंतजार कर रहे थे। उनके हाथ में एक किताब थी, जिसमें वे तल्लीन थे। बीच-बीच में कोई विघ्न होने पर किताब से नजर हटा इधर-उधर देख लेते थे। तभी उन्हें एक महिला की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने देखा कि एक स्त्री बहुत ही सलीक़े से लाल बॉर्डर की सफ़ेद साड़ी पहने खड़ी थी। उसके आधे काले सफ़ेद खिचड़ी बालों से गुथी हुई चोटी और उस पर सलीक़े से लगा हुआ सफ़ेद रंग का गजरा बहुत भले लग रहे थे। स्त्री की आवाज़ में कुछ ऐसा था कि श्रीधर मिश्र उस पर से नज़रें नहीं हटा पा रहे थे। वे उसे देखने की भरकस कोशिश कर रहे थे। वह रिसेप्शन पर खड़ी किसी से बात कर रही थी। जैसे ही वह अपनी बात समाप्त कर मुड़ी, श्रीधर मिश्र ने उसे आश्चर्य से देखा एवं स्वत: खड़े होकर उसके सामने पहुँच गए। अब आश्चर्यचकित होने की बारी पृथा की थी। जी, हाँ। उसका नाम पृथा था। वह एक दूसरे को निर्निमेष भाव से देखते रहे। कुछ समय यूँ ही व्यतीत हो गया। उनके बीच कोई वार्तालाप नहीं हुआ। परंतु आँखों ने एक दूसरे से बहुत सारी बातें की, एक दूसरे को स्वस्थ एवं सलीक़ेबद्ध देखकर दोनों बहुत संतुष्ट थे। तभी रिसेप्शनिस्ट ने आकर कहा, ''सर, आपसे कोई मिलने आए हैं।'' रिसेप्शनिस्ट की आवाज़ से उनकी तंद्रा टूटी। श्रीधर मिश्र ने देखा दो आदमी उनका इंतज़ार कर रहे थे, उन्होंने उनको हाथ से बैठने का इशारा किया और पृथा की ओर मुखर होते हुए पूछा, ''क्या तुम आज शाम को मिल सकती हो?'' पृथा ने स्वीकृति में सिर हिलाया। एक दूसरे का मोबाइल नंबर लेकर रुख़सत हुए। कॉन्फ्रेंस के दौरान श्रीधर का ध्यान बार-बार पृथा की ओर जा रहा था। उनके मन में बहुत उथल-पुथल चल रही थी। इतने साल पृथा कहाँ रही, कैसे रही, क्या किया होगा? वह बार-बार मन को समझाते, शाम को मिलने पर सब पता चल जाएगा, पर मन फिर भी उसी ओर भागे जा रहा था और लाख समझाने के बावजूद भी पृथा के बारे में सोचे जा रहा था।

पेशे से सर्जन श्रीधर मिश्र देखने में जितने रोबीले दिखते थे अंदर से उतने ही सरल स्वभाव के थे। वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। ना केवल जन्म से वरन् मन, वचन एवं कर्म से भी वे ब्राह्मण थे। जनेऊ धारण करते थे। लोग उन्हें कट्टर ब्राह्मण समझते थे, परंतु ऐसा न था। बाल्यावस्था में उन्होंने अपने पिता से बहुत से तर्क-वितर्क किए और किसी भी काम को करने या ना करने के पीछे क्या कारण है, उनसे पूछते रहे। जब तक किसी बात का संतोषजनक जवाब नहीं मिल जाता, वे उस कार्य को करना या ना करना स्वीकार नहीं करते। पिता के चले जाने के

बाद उन्होंने स्वयं ही बहुत सी बातों का जवाब ढूँढा। वेदों का अध्ययन -मनन किया। विभिन्न संस्कारों को करने के पीछे के कारण उन्हें समझ में आए और जो उन्हें ठीक लगे, उन्हें अपना लिया। इस प्रकार श्रीधर मिश्र ना सिर्फ़ जन्म से ब्राह्मण थे वरन् उन्होंने कर्म से भी ब्राह्मणत्व प्राप्त किया।

कॉन्फ्रेंस समाप्त होते ही श्रीधर वापस होटल आ गये। अपने कमरे में बैठा श्रीधर अतीत में खो गया। श्रीधर और पृथा दोनों ही AIIMS, दिल्ली के विद्यार्थी थे। दोनों ही पढ़ने में अव्वल थे। प्रथम वर्ष MBBS में पृथा ने जब श्रीधर को देखा तो उसे वह बहुत ही अड़ियल किस्म का व्यक्ति मालूम पड़ा। जहाँ पृथा बहुत ही मिलनसार और हँसमुख लड़की थी, वहीं श्रीधर गंभीर एवं अंतर्मुखी था। पृथा के बहुत से मित्र थे परंतु श्रीधर का कोई मित्र ना था। यद्यपि श्रीधर को इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। एक बार पृथा को टाइफ़ाइड ने जकड़ लिया। बीमारी काफ़ी लंबी चली। पृथा कॉलेज भी नहीं जा पाई। उसकी पढ़ाई का बहुत हर्जा हुआ। सेमेस्टर एग्ज़ाम सिर पर थे और पृथा की कोई

तैयारी ना थी। बीमारी के कारण कमज़ोर हुई पृथा बहुत तनाव में थी। जब श्रीधर को यह बात पता चली तो उसने पृथा से बात की। पृथा की वस्तुस्थिति को देखते हुए श्रीधर ने उसे सारे नोट्स कॉपी करा दिए। परंतु काफ़ी लंबा गैप हो गया था अत: पृथा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। ऐसे में उसने श्रीधर को अपनी परेशानी बताई। तब श्रीधर ने उसे लाइब्रेरी में रोज़ाना पढ़ाना शुरू किया। यद्यपि इसमें श्रीधर का कुछ नुक़सान हुआ। इस दौरान पृथा को श्रीधर के दूसरे रूप को देखने का अवसर मिला। जहाँ दूसरे सभी दोस्त अपनी-अपनी तैयारी में व्यस्त थे, वही श्रीधर अपनी पढ़ाई का नुकसान करके भी उसकी तैयारी करा रहा था। पृथा उसकी बहुत आभारी थी। परीक्षाएं नियत समय पर पूरी हुईं। जब रिजल्ट आया तो पृथा एवं श्रीधर के बराबर मार्क्स थे। दोनों ने एक साथ टॉप किया था। सभी आश्चर्यचकित थे। पृथा ने श्रीधर का आभार व्यक्त किया इस घटना के कारण दोनों की मित्रता हुई। जब पृथा श्रीधर के साथ होती वह भी गंभीर बनी रहती। उन दोनों के बीच मित्रता गहरी होती गई। धीरे-धीरे उनकी मित्रता के चर्चे पूरे कॉलेज में होने लगे। इन सब बातों से अनजान पृथा और श्रीधर जब भी आपस में मिलते उनमें पढ़ाई के सिवा कोई और वार्तालाप नहीं होता। दोनों ही कॉलेज में टॉप कर रहे थे। कभी श्रीधर के दो नंबर ज्यादा आ जाते, कभी पृथा के। दोनों अपनी पढ़ाई में लीन थे। अपना MBBS खत्म कर श्रीधर ने निर्णय किया कि वह हार्ट सर्जन बनेगा अत: उसने हार्वर्ड का रुख किया और उधर पृथा ने फ़िजीशियन बनने के लिए स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में दाख़िला लिया। इस तरह दोनों की राहें जुदा हो गईं। दोनों अपनी-अपनी पढ़ाई करते रहे। लगभग अगले पाँच वर्ष पढ़ने में निकल गए। पढ़ने के बाद दोनों काम करने लगे। जब घरवालों ने श्रीधर से शादी करने के लिए कहा गया तो उसे सबसे पहले पृथा का ख़्याल आया। इस तरह पृथा का ख़्याल आने से स्वयं श्रीधर भी अचंभित था। उसने कभी सोचा भी ना था कि पृथा उसके दिल में जगह बना चुकी थी। उसने पृथा को खोजना चालू किया। उसे पता चला की पृथा भारत वापस लौट गई है और वहाँ गाँव में काम कर रही है। शुरू में उसने स्टेनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में ही अध्यापन का कार्य किया था परंतु उसने यूनिवर्सिटी में पढ़ाने की तुलना में गाँव में सेवा करना चुना। श्रीधर अमेरिका रहकर अपनी रिसर्च जारी रखना चाहता था। परंतु वह भारत आया और आकर पृथा से मिला। उससे अपने मन का द्वंद पृथा से साझा किया परंतु पृथा तो निर्णय ले चुकी, थी उसे तो गाँव में ही रहना था अत: उसने श्रीधर से कहा कि गाँव में श्रीधर की बहुत ज़रूरत है अत: वह भी गाँव आ जाए। परंतु श्रीधर गाँव नहीं आना चाहता था और पृथा अमेरिका नहीं जाना चाहती थी। अत: दोनों के रास्ते एक बार पुन: अलग-अलग हो गए। दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए। आज तीस साल बाद दोनों पुन: मिले। श्रीधर मिश्र शाम होने का इंतज़ार करते रहे। यूँ तो 30 साल कैसे बीत गए, उन्हें पता ही नहीं चला। पर आज उन्हें एक-एक पल भी बहुत भारी लग रहा था। उन्होंने फ़ोन पर पृथा से बात की और मिलने का समय पूछा। शाम आठ बजे डिनर पर मिलने का तय हुआ। शाम आठ बजे श्रीधर नियत समय पर पहुँच गया। पृथा वहाँ पहले से मौजूद थी। बातचीत के दौरान पता चला कि पृथा गाँव में ही काम कर रही है और बहुत अच्छा काम कर रही है। उसके काम की बहुत तारीफ़ हो रही है। उसे कई सम्मान मिल चुके हैं। उसे गाँव में चिकित्सा क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है। वह पाँच वर्ष के लिए राज्यसभा की मनोनीत सदस्य रह चुकी है। यूनाइटेड नेशन्स से भी उसे प्रशंसा पत्र प्राप्त हो चुका है। जहाँ एक ओर श्रीधर पृथा के अचीवमेंट्स से बहुत प्रभावित हो रहा था। वहीं पृथा ने श्रीधर से कुछ नहीं पूछा। क्योंकि पृथा को पहले से ही सब पता था। उसी ने आगे होकर पूछा पिछले साल तुम्हारा नाम नोबेल प्राइज़ के लिए नॉमिनेट हुआ था फिर क्या हुआ? जब तुम्हें नोबेल प्राइज़ मिले तो मुझे ज़रूर बताना मैं तुम्हें नोबेल पुरस्कार लेते हुए देखना चाहती हूँ। श्रीधर ने पिछले 30 सालों में बहुत काम किया था और इस दौरान वह पृथा को लगभग भूल चुका था। परंतु पृथा को उसके बारे में सब पता था यह जानकर उसे आश्चर्य हो रहा था। तभी श्रीधर ने पृथा से पूछा घर में कौन-कौन हैं? पृथा मुस्कुराई और बोली मैं तो सोच रही थी तुम सबसे पहले मुझसे यही पूछोगे। बाबूजी को गुज़रे अरसा हो गया और माँ का भी पिछले वर्ष देहांत हो गया। छोटा भाई अब अमेरिका सैटल हो गया है। श्रीधर ने पुन: पूछा और कौन-कौन है? इस बार पृथा और ज़्यादा मुस्कुराई, जिसे तुम एक्सपेक्ट कर रहे हो

वह नहीं है। श्रीधर ने कहा, ''पहेलियाँ क्यों बुझा रही हो? पृथा! सीधे-सीधे बताओ ना तुमने शादी की या नहीं?'' पृथा बोली मैंने तो बहुत पहले ही शादी कर ली थी इसीलिए तो तुम्हारे साथ नहीं की। श्रीधर चौंका किसके साथ? मेरे काम के साथ पृथा बोली। तो क्या तुम अब अकेली रहती हो? नहीं, मेरे साथ मेरा पूरा गाँव है। सुबह-सुबह दूध वाला आ जाता है। पिछले 25 सालों से आ रहा है। बिल्कुल घर के सदस्य जैसा लगता है किसी दिन उठने में ज़रा देर हो जाए तो गाँव के 10 लोगों को ख़बर कर देता है। उसके बाद तो दिन भर घर पर लोगों का ताँता लगा रहता है। श्रीधर ने बीच में ही बात काट कर कहा, तुम ने शादी क्यों नहीं की? पृथा बोली बस इस बारे में सोचा ही नहीं। वैसे तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो तुमने भी तो नहीं की। तुम्हें कैसे पता? मुझे क्या नहीं पता? तभी वेटर खाने का ऑर्डर लेने आ गया। पृथा ने पूछा, क्या तुम अब भी आलू का पराँठा और दही खाओगे? श्रीधर ने हामी भरी। पृथा ने वेटर से कहा, आलू पराँठा और दही ले आओ, आज मैं भी वही खाऊंगी। वेटर ने दोनों को ऊपर से नीचे तक देखा फिर चुपचाप चला गया। शायद वह खाने के ऑर्डर में बहुत कुछ एक्सपेक्ट कर रहा था और इतना संक्षिप्त ऑर्डर सुनकर थोड़ा चकित था। आज श्रीधर सोच रहा था जिस प्यार का इज़हार कभी ना हुआ वह आज भी इतना गहरा है पृथा को मेरी एक-एक बात याद है। उसने पृथा से कहा, पृथा तुम तो जानती थी कि मुझे प्यार-व्यार समझ में नहीं आता था और मुझे तो पता ही नहीं चला कि मैं कब तुम्हें चाहने लगा पर तुम्हें तो पता था ना? काश! तुम ही बता देतीं। पृथा ने कहा, अहसास तो मुझे बहुत पहले हो गया था पर यह भी समझ आ गया था कि हम अलग-अलग ही ठीक हैं क्योंकि हमारी मंज़िलें जुदा थीं। इसीलिए तुम्हें कुछ कहा नहीं। श्रीधर ने पृथा की आँखों में देखते हुए पूछा क्या तुम अब भी मेरे साथ चलना पसंद करोगी? पर पृथा ने कहा, मैं कैसे चल सकती हूँ? यहाँ बहुत से काम बाक़ी हैं। श्रीधर को भी रिसर्च का बहुत काम करना था। अत: वह भी नहीं रुक सकता था। उसे भी बस कल शाम को ही चले जाना था। दोनों ने खाना समाप्त किया। तब श्रीधर ने कहा, चलो कमरे में चलकर कॉफी पीते हैं वहीं पर थोड़ी बातें करेंगे। पृथा भी तैयार हो गई। दोनों श्रीधर के कमरे में आ गए। श्रीधर ने पूछा, ''क्या तुम मुझसे नहीं पूछोगी कि मैंने इतने साल क्या किया?'' पृथा ने मुस्कुराकर जवाब दिया, नहीं तुम्हारे बारे में मुझे कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं है जो कुछ मुझे तुम्हारे बारे में जानना होता है Wikipedia में सब मिल जाता है। तुम तो इंटरनेशनल फ़िगर हो गए हो। अगर तुम अपने बारे में कुछ भूल गए हो तो मुझसे पूछ सकते हो। पृथा ने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा। श्रीधर ने फ़ोन पर काफ़ी ऑर्डर की। पृथा ने पूछा, क्या तुमको अब भी हल्की ठंड में ज़ुकाम हो जाता है? हाँ कहते हुए श्रीधर ने धीरे से आँखें बंद की और मैं तुम्हारा बताया देसी नुस्ख़ा ले लेता हूँ तो ठीक भी हो जाता है। तभी कॉफ़ी आ गई, दोनों ने कॉफ़ी पी।

घड़ी ने रात के ग्यारह बजा दिए। पृथा उठकर चलने को तैयार हुई। श्रीधर भी उसे छोड़ने नीचे आया। दोनों रिसेप्शन पर खड़े थे। ड्राइवर से गाड़ी लाने को कह दोनों उसके आने का इंतज़ार करने लगे। तभी पृथा लड़खड़ा कर गिर पड़ी। श्रीधर को कुछ समझ नहीं आया उसने पृथा को उठाने का प्रयास किया। पर वह उठ नहीं पा रही थी। उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। श्रीधर को समझते देर ना लगी कि पृथा को हार्ट अटैक आया है। उसने तुरंत एंबुलेंस मंगवाई और जो उपचार वह वहाँ कर सकता था, उसने किया। पृथा बोली श्रीधर तुम मुझे बचा नहीं पाओगे। शायद मैं तुम्हें देखने के लिए ही जीवित थी! इस बार मैं तुम्हें जाता हुआ नहीं देखना चाहती थी। इसीलिए पहले मैं जा रही हूँ। श्रीधर ने पृथा का सिर अपनी गोद में रख लिया। पृथा की आँखें बंद हो रही थी। श्रीधर ने पृथा का हाथ कस के पकड़ लिया। पृथा ने भी श्रीधर का हाथ पकड़ रखा था। परंतु कुछ ही पल में पृथा ने अपनी पकड़ छोड़ दी। श्रीधर की आँखें नम हो आईं।

पृथा को गए हुए एक वर्ष बीत गया। आज उसकी प्रथम पुण्यतिथि है। आज श्रीधर को नोबेल पुरस्कार मिलने वाला है। सुबह से ही श्रीधर की आँखों के कोरों पर नमी सी थी। नोबेल पुरस्कार ले श्रीधर कहीं नहीं रुका, सीधे घर आया। पृथा की फ़ोटो जेब से निकाल उसके सामने सब रखकर बोला यह तुम्हारी तीस साल की तपस्या का फल है, तुम्हीं को समर्पित है।

❑❑

तुम्हारे प्रतीक

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय, जयपुर

तुमने कहा स्वीकार करो
और करो प्रदर्शित स्वीकारोक्ति

मैंने माना हर बंधन,
स्वेच्छा से श्रद्धा से

बना लिया उसको आभूषण
सजा लिया खुद को
सभी प्रतीकों से।

तुम्हारे होने का
सबूत देती है,

मेरी भरी हुई माँग,
माथे की बिंदी ।

गले का मंगलसूत्र
नहीं अखरता मुझे

बल्कि

लगता है प्राणों से प्रिय ये ।

हाथों की चूड़ियों की खनखनाहट से
कार्यस्थल पर
नहीं आती झेंप मुझे

न ही समझती हूँ
पुरातन स्वयं को इससे,

बल्कि
तरह-तरह की चूड़ियों से
सजाती हूँ अपनी कलाई को।

लगाती हूँ मेहँदी, महावर,
तुम्हारे प्रतीक के रूप में।

पहनती हूँ बिछुए,
नहीं गड़ते ये मुझे उँगलियों में।

तुम्हारे होने के सभी प्रतीक,
आभूषण हैं मेरे, नहीं चाहती करना
इन्हें अलग कभी अपने से।

नहीं स्वीकार्य मुझे
अपना ऐसा अस्तित्व,
जो हो बिना इनके।

प्रतीत तो होते हैं ये प्रतीक
बाँधते से मुझे

किंतु,

इनकी पूर्ति का दायित्व है
अवश्य तुम पर ही

इस तरह,

मुझसे अधिक उत्तरदायित्व
डालते हैं ये तुम पे।

जानती हूँ मैं
कि अच्छा लगता है तुम्हें,
होते हो हर्षित तुम
देख कर सजा मुझे
इन प्रतीकों से

करते हो खर्च
अपने सीमित
साधनों से
बची अधिशेष
राशि,
मेरे गहनों पर,
सुर्खी बिंदी पर ।

लगता है मुझे भी
अच्छा सजना इनसे।

माँगती हूँ दुआ
सुहाग की प्रतिवर्ष,
सजा कर स्वयं को
कोसों दूर बसे आकाश के चाँद से,

मेरी लाख पढ़ाई के बावजूद,
नहीं होता करवा चौथ का चंद्रमा,
मात्र एक उपग्रह मेरे लिये।

वस्तुत: कोई विरोध नहीं है
तुम्हारी और मेरी भावनाओं में।

बँधे रहना चाहते हैं हम दोनों,
लता और वृक्ष की तरह

इसलिए

तुम्हारे मेरा होने का
नहीं चाहिये मुझे
कोई प्रतीक, कोई प्रमाण तुमसे।

❑❑

रामगढ़ के गोले

दीपक पंजाबी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

बसंती गब्बर के क़ब्ज़े में...सारे डाकू चारों तरफ़ और वीरू बँधा हुआ।

गब्बर : ये रामगढ़ वाले कौन चक्की का आटा खिलाते हैं रे..हाथ पैर तो देख....

सारे डाकू : सरदार ''आशीर्वाद'', नहीं सरदार ''नेचर फ्रैश'' नहीं सरदार ''शक्तिभोग''

गब्बर : अबे चुप... डायलॉग मारे थे या आटे पे क्विज खेले थे..सुन री बसंती...जब तक तेरे पैर चलेंगे..इसकी साँसे चलेंगी।

बसंती : यूँ के ये क्या बात हुई....पैरों से साँसों का क्या लेना देना....यानि कि अगर पैर तेज चल गए तो वीरू का BP हाई हो जाएगा।

गब्बर : देख बसंती जितना बोला उतना सुन, चुपचाप नाच नहीं तो गया तेरा वीरू।

बसंती: जोरामरदी काहे करता है रे गब्बर, आराम से बात कर।

वीरू : बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना....

बसंती : क्यों नहीं नाचना...इत्ते साल हो गए बसंती को मौसी और धन्नो के सामने नाचते-नाचते....बड़ी मुश्किल से दो-चार कला प्रेमी मिले हैं....आज बसंती फुल टू नाचेगी...बोल गब्बर क्या देखेगा....कुचिपुड़ी-भरतनाट्यम या ओडिसी।

गब्बर : कुचिपुड़ी.....अबे ये किसको पकड़ लाये....अरे ओरे साम्भा....इसको बता कितना इनाम रखे है सरकार हम पर..

साम्भा : सरदार पूरे 50 हजार....लेकिन इसमें आजकल एक ढंग का मोबाइल भी नहीं आता।

गब्बर : अबे चुप.....यहाँ से 50 कोस दूर जब कोई बच्चा नहीं सोता तो माँ कहती है सो जा नहीं तो गब्बर आ जायेगा।

डाकू : नहीं सरदार....जब से एयरटेल और वोडाफोन ने नाइट कॉलिंग फ्री की है तब से माएं फ़ोन पे ही लगी रहती हैं....बच्चे कुनकुना के ख़ुद ही सो जाते हैं।

गब्बर : साला क्या ज़माना आ गया है....गब्बर की कोई इज़्ज़त ही नहीं रही। और तू बसंती ....तेरा नाच अभी तक शुरू नहीं हुआ क्या... फ़ेसबुक पर तो अपनी फ़ोटू डांस वाली ही लगाती है..

बसंती : तू फ़ेसबुक की तो बात ही मत कर गब्बर...और ये तेरा साम्भा.... तुझको म्यूच्यूअल फ्रेंड देख कर इसको ऐड किया... और ये मेरे बर्थडे के दिन मेरी वाल पर हैप्पी एनिवर्सरी लिख गया....10-12 लड़कों ने अनफ्रेंड कर दिया इस चक्कर में।

साम्भा : तो सरदार ये पिछले चार साल से स्टेटस में इन रिलेशनशिप लिख रही थी..मैंने सोचा अब तो शादी हो गई होगी।

बसंती : कहाँ से करूँ शादी ...दो साल तो ठाकुर के साथ कमिटेड थी जिसको इस गब्बर ने टुंडा बना दिया...फिर एक साल रामलाल से काम चला रही थी कि ये वीरू आ गया....

वीरू : बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना....

बसंती : वीरू तू चुप हो जा नहीं तो एक चमाट मारूँगी वही आके....और तू गब्बर बताता क्यों नहीं कौन सा नाच देखेगा।

गब्बर : कोई सा भी दिखा बसंती....लेकिन सब डाकू लोगों सुन लो....कोई भी आठ सेकंड से ज्यादा लगातार नहीं देखेगा ....साले सरकार ने इसमें भी पाबन्दी लगा दी....धारा 376 लग जाएगी....और तू कालिया...तू बहुत ध्यान से देख रहा है.....मालूम तूने मेरा क्या खाया है..

कालिया : सरदार नमक खाया है ...बिना आयोडीन का ....वो भी इत्ता सारा...घेंघा हो गया...अब तो गोली मार ही दो।

साम्भा : सरदार गोली मत मारना....2-3 बची हैं दिखाने के लिए....आपने कॉस्ट कटिंग के चक्कर में आधे घोड़े बेच कर डाकुओं को हीरो

होंडा स्प्लेंडर दिला दी, डाकू कम पिज़्ज़ा के सेल्समैन ज्यादा लगते हैं।

बसंती : यूँ की अब तुम सब लोग चुपचाप बैठ जाओ, बसंती नाच शुरू करने वाली है और गधों की तरह देखते मत रहना....कोरस भी देना।

डाकू : एक मिनट सरदार..पहले तय कर लो कि हम क्या हैं.....तुमने सुबह कहा सुअर के बच्चों, वीरू कहता है कुत्तों के सामने मत नाचना और ये बसंती हमको गधा कह रही है। सरदार इससे अच्छे तो हमारे घोड़े हैं हैं जो पास वाले लाउन्ज में एक घंटे से धन्नो का नाच देख रहे हैं...और यहाँ ये बसंती हमको पकाये जा रही है।

वीरू : बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना...

गब्बर : अरे कोई इसको चुप कराओ....यार तेरी प्रॉब्लम क्या है....तू भी नाच देख।

बसंती : यूँ के साम्भा तेरे पास टेप है क्या...चिपका दे इसके मुँह पे।

गब्बर : बस बहुत हो गया...तू रहने दे बसंती...अब नाच देखने का मन ही नहीं है।

बसंती : नहीं-नहीं अब मैं तो मूड में आ गई...नाच तो देखना पड़ेगा ....तो अब शुरू होता है बसंती का नाच....पहले सरस्वती वंदना...फिर कुचिपुड़ी में लघु नाटिका...फिर मणिपुरी ..फिर सालसा...जाज....हिप हॉप और आख़िर में हनी सिंह का पानी-पानी।

गब्बर : बसंती मारेगी क्या ...एक नाच के लिए कहा तू तो पूरा थिएटर उठा लाई....

बसंती : यूँ के गब्बर तू भी याद रखेगा बसंती का नाच.....और जिस चक्की का आटा मैं खाती हूँ वहाँ से तेरे लिए भी बेसन-मैदा भिजवा दूँगी...तेरे हाथ भी करारे हो जाएंगे।

गब्बर : बसंती माफ़ कर दे ग़लती हो गई.....तू जा यहाँ से....मैंने तो अभी तक तेरा नमक भी नहीं खाया...फिर भी चाहे तो गोली खा लूँगा।

❑❑

जी ले ज़रा

देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

चलो ज़िंदगी को जिया जाए...
ज़िंदगी को यूँ ही काटा नहीं, जिया जाए।
अधूरी ख़्वाहिशों की मौजों को नया साहिल दिया जाए,
फिर से नंगे पैर तपती दुपहरी में भी मौज बनाएं बचपन की,
सूरज को भी बचपन की ताकत का एहसास दिलाया जाए।
चलो ज़िंदगी को जिया जाए...
ज़िंदगी को यूँ ही काटा नहीं, जिया जाए।

वो आसमाँ टुकड़ों में बाँटना, वो चाँद से पकड़मपकड़ाई,
सितारों को रोज गिन के रखना अपने-अपने बस्तों में,
वो बचपन की शैतानियाँ, दोस्तों से नाम की लड़ाइयाँ,
फिर से उन्हीं यारों को धूल में गुत्थम-गुत्था होने की चुनौती दी जाए।
चलो ज़िंदगी को जिया जाए...
ज़िंदगी को यूँ ही काटा नहीं, जिया जाए।

माँ के आँचल से दूरी अब समझ आई है,
ताउम्र उसी ख़ालिस जन्नत में जीने की दुआ की जाए,
मज़बूत दरख़्त सा खड़ा पिता लड़ता रहा ज़माने से
अपने ख़ून-पसीने से सींचता रहा नन्हें फूलों को,
अब उस सूखते दरख़्त को अपने लहू से सींचना पड़े, तो सींचा जाए।
चलो ज़िंदगी को जिया जाए...
ज़िंदगी को यूँ ही काटा नहीं, जिया जाए।

हमसफ़र तो संग था पर दिलों का सफ़र जुदा था शायद,
अब इस रिश्ते को एक ही रास्ता, एक ही मंज़िल, एक ही मुक़ाम दिया जाए।
बहुत जी लिए पैसे और पैसे वालों की ख़ुशी के लिए,
अब मज़लूमों, मुफ़लिसों की तकलीफ़ों को दूर करने को जिया जाए।
यूँ ही चल रही है ज़िंदगी बेवजह, बेपरवाह सी
इसे कोई मक़सद, मतलब और नाम-ए-हिंदोस्तान किया जाए।
चलो ज़िंदगी को जिया जाए...
ज़िंदगी को यूँ ही काटा नहीं, जिया जाए।

❑❑

कहानी सुवर्णा और हिमनद की

रचना सुधीर, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

बहुत समय पहले की बात है, एक सुनहरी मिट्टी का तट था, नाम था सुवर्णा। अनंत दूरी तक फैला हुआ, बड़ा ही घमंडी, अपने ऊपर आकर पसरने वाले हिमनद के नशे में चूर.....उन्माद में सराबोर. उसके ऊपर पसरने वाला वो एक मात्र हिमनद ही उसकी दुनिया था, बाकी पूरी दुनिया से वो बेखबर था। हिमनद भी आँधी के रोकने, तूफान के टोकने, चट्टान से टकराने के बाद भी सबसे किनारा करके अपने ही सुनहरे तट पर आकर चैन पाता। दोनों ही एक दूसरे के साथ से परिपूर्ण थे व एक दूसरे से दूर व्याकुल रहते थे।

हिमनद को अक्सर ही अपने रास्ते से दूर, क्षितिज में, एक सफ़ेद मिट्टी का टापू दिखाई देता था। वह उसे छूने के लिए लालायित था, पर वह उसके पथ और किनारे दोनों ही से विलग था। धीरे धीरे समय बीतता गया, परिस्थितियों ने सुवर्णा को कुछ उदासीन कर दिया था, हिमनद ने भी सुवर्णा के लिए अपना कुछ उन्माद खो दिया था पर उन्मादी तो वह था ही, रास्ते में पड़ने वाली हर चीज को छूने की इच्छा रखता था, चाहता था हर कोई उसके वेग से प्रभावित हो, हर वस्तु को अपने प्रवाह से गीला कर देने की इच्छा रखता था। सो एक दिन चुपचाप ही जिज्ञासावश उस श्वेत मिट्टी के टापू की ओर अपना रुख कर लिया, और उसको भी अपना पड़ाव बना लिया। सुवर्णा अपने हिमनद के इस सफ़र से बेख़बर रहा। इधर सुवर्णा उदासीन तो था पर अपने हिमनद से दूर कभी नहीं होना चाहता था और उसके इंतज़ार में अपने आप को बनाये रखा। एक दिन धरती में एक ज़लज़ला आया और सुवर्णा का घमंड चूर-चूर हो गया। वह अपना अस्तित्व खोने लगा। हिमनद ने बड़े ही प्रयत्न से अपने बढ़ते पानी को रोका और सुवर्णा को बचाने का प्रयास किया। सुवर्णा भी अपने हिमनद के साथ कुछ और सुन्दर समय व्यतीत करने के लिए लालायित था सो उस प्रलोभन में हिमनद को संपूर्णत: अपने अन्दर उतार लिया। हिमनद सुवर्णा की दरियादिली से मदमस्त हो गया, पर ठहरना उसकी प्रवृति में न था, वह फिर अपने रास्ते चल दिया।

बहते बहते उसे रास्ते में पानी के ऊपर अधर में एक लौ जलती हुई दिखाई दी। हिमनद की उत्सुकता फिर जागृत हो उठी और वह उस लौ के करीब पहुँचा। वह लौ ठंडी न हुई, हिमनद ने अपने जल को ज्वलनशील बनना महसूस किया। लौ की लालिमा बढ़ने लगी। सुवर्णा दूर से इस दृश्य को देख रहा था, किन्तु अपने हिमनद पर अथाह भरोसे के चलते उसने हिमनद को लौ से दूर करने की चेष्टा न की पर उसको ध्यान ज़रूर दिलाया कि तुम एक स्वच्छ और निर्मल जल वाले सतत हिमनद हो जिसका किनारा

मैं हूँ, वह लौ तो एक अस्थायी और आधारविहीन लपट मात्र है। पर हिमनद हठी हो उठा था। सुवर्णा जो कि धरती के ज़लज़ले से नष्ट न हुआ था, हिमनद की इस हठ से मायूस हो गया और सिकुड़ने लगा, अपना अस्तित्व खोने लगा। सुवर्णा ने अपना नैसर्गिक स्वभाव खो दिया। वह अस्थिर, अशांत, अधीर, कांतिहीन और लहरदार हो गया।

कुछ समय पश्चात् एक दिन सुबह का ऐसा सूरज उगा कि सुवर्णा सूर्य की सुनहरी गुलाबी आभा में सुदीप्त हो उठा। उसकी आभा चिर व भावविभोर करने वाली थी। हिमनद भी अपने आप को उस आभा से अछूता न रख सका और अपने सुनहरे तट की ओर लौट आया। सुवर्णा जीवंत हो उठा और उसने फिर अपने हिमनद को बाँहें खोलकर अपने आगोश में ले लिया और उसके स्वरों की अलकनंदा में आच्छादित हो गया।

❑❑

यम से संवाद

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

जीवन के अंतिम पड़ाव पर
यम खड़ा दरवाज़े पर!
पर, तू रुक अभी!
मेरे कुछ काम अधूरे हैं!
करने कुछ सपने पूरे हैं।

हा! हा! हा!.....
क्या समझ लिया तूने मुझको
क्या समझ नहीं इतनी तुझको

अब कोई मोहलत ना तुझको मिल पाएगी,
अब कोई युक्ति काम न तेरे आएगी।

अब तो बस तैयारी कर ले
तू साथ में मेरे चलने की।
मोह माया सब त्याग
अब रात नहीं यह ढलने की।

पर आने से पहले
कोई संदेशा तो भिजवाया होता।
मैं कुछ तैयारी तो कर लेता
अपने प्रियजन से मिल लेता।

मन में ऐसा कोई भ्रम ना लाना।
चल फिर कल साथ में तू मेरे आना।

अगर न कोई पहचाने तो
तनिक नहीं तू घबराना।
नहीं जानता तुझको कोई
तेरे तन से तेरी पहचान यहाँ।

रिश्ते सब काया के हैं,
या धन दौलत माया के हैं।
रिश्तों का तू मोह ना करना,
चल अब मेरी बाँह पकड़ना।

तू तो शाश्वत अजर अमर है!
पर तेरी इनको दरकार कहाँ!
जो समझ सके तेरे मन को
ऐसा कोई इंसान कहाँ।

नहीं यह सत्य नहीं हो सकता है।
मात-पिता ने जन्म दिया था,
पाला पोसा बड़ा किया था।
पत्नी ने घर संसार बसाया।
बच्चों बिन जग सूना सारा।
मुश्किल है इनको बिसराना।

क्या जीवन का नहीं प्रयोजन कुछ भी मेरे!
फिर क्यों धरती के लगवाता फेरे।

यह सब सो निमित्त मात्र हैं,
नर शरीर धरने को तेरे!
हर शरीर के साथ बदलते
सारे रिश्ते नाते तेरे।

तू क्यों इनमें
उलझा ऐसे,
कोई काम नहीं हो
दूजा जैसे!
यह जीवन का
उद्देश्य नहीं है!
यह साधन है साध्य नहीं है!
यह पूजा है आराध्य नहीं है
तू केवल इनसे बाध्य नहीं है।

अब सारे बंधन तोड़ कर आ जा,
चल परम पिता की शरण में आ जा।
क्षणिक से शाश्वत हो जा।
लौकिक से अलौकिक हो जा।
लघु से अनंत हो जा।
नश्वर से ईश्वर हो जा।

हे यम देवता चलता हूँ!
काम हुए सारे पूरे।
बस ये ही ज्ञान अधूरा था।

हे परम पिता मन में मेरे
ऊर्जा का संचार कर दे!
कण-कण में शक्ति भर दे!
यह हृदय विशाल कर दे!
अब इस पिंजरे से आज़ाद कर दे!
अब इस पिंजरे से आज़ाद कर दे।

❑❑

कोविड-19 : अभिशाप नही वरदान है

प्रीति जैन, पत्नी श्री मनीष जैन, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

कोरोना..... कोरोना..... कोरोना..... आज हर इंसान के मुँह से सोते-जागते-उठते-बैठते सिर्फ कोरोना का रोना ही सुनने को मिल रहा है। आज कोरोना (कोविड -19) वायरस से फैली महामारी पूरी दुनिया में भयानक तांडव मचा रही है। पूरी दुनियां इससे निजात पाने में लगी है। अभिशाप होते हुए भी यह निम्न कारणों से हमारे लिये वरदान सिद्ध हो रही है।

1. **प्राकृतिक व पर्यावरण संबंधी :-**

आज कोविड-19 का सबसे बड़ा सुखद पहलू है 'प्रकृत्ति का शुद्धिकरण'। प्रदूषण के विकराल राक्षस को जहाँ बड़ी-बड़ी संस्थाएं, वैज्ञानिक व कार्य गोष्ठियां नही सुलझा पाई है। अरबों-खरबों रुपये खर्च कर दिए जाने पर भी प्रदूषण ''ढाक के तीन पात'' ..की तरह जस का तस बना हुआ था। यहाँ तक कि ब्रह्मांड की ओज़ोन परत में भी छिद्र हो गया है जो पृथ्वी को प्राकृतिक विपदाओं (पराबैंगनी किरणों) से बचाती आई है। अति स्वार्थी इंसान अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है।

हम-सब एक पिंजरे के पंछी की तरह एक ही छत के नीचे (लॉक-डॉउन के नाम पर) सिमट गए है। हवा, पानी, पेड़-पौधे, नदी , तालाब, पहाड़..पंछियों को मानो नया जीवन मिल गया है .. सब (जल, थल, नभ) प्रदूषण के राक्षस के शिकंजे से उन्मुक्त हो गए है। सब (धुंआ ..शोर ..गंदगी) क़ाबू में आते जा रहे हैं। ऑक्सीजन का स्तर काफ़ी बढ़ व कार्बन डाइऑक्साइड का घट गया है। स्वच्छ हवा व पंछी उन्मुक्त विचरण कर रहे हैं।

सितारों व ग्रहों को आसानी से देखा जा रहा है। महासागर के जीवों को नया जीवन मिल रहा है।

शोर की कमी से वैज्ञानिकों को भू-गर्भ में हो रही हर हलचल (भूकंप) इत्यादि को जानने व मापने में आसानी हो रही है।

अत: चहुँओर नए शुद्धिकरण व ऊर्जा का संचार हो रहा है।

2. **मानवीय संवेदनाओं का शुद्धिकरण व एकजुटता :-**

बरसों से रिश्ते भागमभाग की ज़िंदगी के चक्रव्यूह में पिस रहे थे। दूरियां- खाईयां बनती जा रही थी। किसी के पास इत्मीनान से बैठकर बात करने या सुनने का समय नही रहता था। 'स्टेटस' बढ़ाने की अंधी दौड़ में न मालूम मानव ने खुद को कितना ''कोल्हू का बैल'' व मशीन

बनाकर रख दिया था ये वो ख़ुद भी न हीं जानता था । पर ''ईश्वर के आगे किसी का ज़ोर नहीं''.. भयानक ईश्वरीय आपदाएं सब कुछ फिर से 'रिवर्स' व 'रिसाइकल' कर देती है। सभी देश मतभेद भूल आपसी सहयोग से दूरियों, स्वार्थ व संवेदनहीनता पर लगाम लगा रहे हैं।

3. **प्राचीन वैदिक संस्कृति व रोगोपचार घरेलू पद्धतियों हेतु जागरूकता :-**

हमे अपने देश की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति व रोग उपचार हेतु योगासन व जड़ी-बूटियों इत्यादि का सम्मान व समझने का भी सुअवसर मिला है।

अत: आज ''वसुधैव-कुटुम्बकम'' की धारणा सही अर्थों में ऐसी संकट की घड़ी में साकार व प्रकाशमान हो रही है। कोविड-19 का यह (प्राकृतिक व मानवीय) मंथन हम-सबको विकास, सुधार हेतु आत्म-चिंतन हेतु प्रेरित कर रहा है।

❑❑

काले बादल

चिराग पायल, भतीजा श्री संदीप पायल, सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

बादल–बादल, काले बादल,
बारिश लाते काले बादल।
पूरा मौहल्ला भिगोते काले बादल,
वृक्षों को पानी पिलाते काले बादल।

जब भी आते काले बादल, ज़ोर–ज़ोर से गरजते हैं,
न जाने किस बात पे वो इतना झगड़ते हैं।
जब भी आते काले बादल, बिजली भी कड़कती है,
वह भी बादलों की तरह एक दूसरे पे भड़कती है।

जब भी आते काले बादल बारिश भी आती है,
सड़कें, नाले और गलियाँ पानी से भर जाती हैं।
पेड़–पौधे पानी पीकर, ज़ोर–ज़ोर से लहराते हैं,
जीव–जन्तु भी अपनी प्यास बुझाकर, बहुत ख़ुश हो जाते हैं।

जब भी बारिश आती, झूले भीग जाते हैं,
बच्चे घर पे खेल–खेल के थक जाते हैं।
खिड़की के पास बैठकर वे बाहर की ओर ताकते हैं,
भगवान से बारिश रुकने की दुआ माँगते हैं।

बारिश रुक जाती और सूर्य निकल जाता है,
जो भी भीगा बारिश में, सब कुछ सूख जाता है।

❑❑

कोरोना काल

अंकित गुप्ता, निरीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

एक वायरस ने किया दुनिया को निढाल
डर के मारे दुनिया हुई बेहाल
बुख़ार, खाँसी बन गई गले की फ़ाँस
गाँव हो या शहर, सबकी अटक गई साँस।
दो गज़ दूरी और मास्क है अब नया फ़ैशन
तुलसी गिलोय काढ़ा पीके बनाओ अपनी स्वस्थ फ़ाउंडेशन
हाथ हों साफ़, चेहरे पर मास्क
स्वच्छ दिनचर्या, सरल जीवन ही समाधान।
कोरोना वॉरियर्स को दें पूरा सम्मान
इन्हीं की वजह से करोड़ों की बच गई जान
वर्क फ्रॉम होम, ई–ऑफ़िस एवं अन्य ऑनलाइन माध्यम से
कार्य करके बढ़ायेंगे अपने देश की गरिमा और मान।
जय हिंद। मेरा भारत महान।

❑❑

जीएसटी दिवस समारोह - 2020

जीएसटी दिवस समारोह – 2020

प्रायश्चित

ऐलिश शर्मा, सुपुत्री अरविन्द कुमार, अधीक्षक (निपटान), सीमा शुल्क, जयपुर

ख़ूबसूरत बंगले के बेशक़ीमती सामानों और फर्नीचर से सजे हुये बैडरूम के ड्रेसिंग अलमीरा से अपनी तमाम क़ीमती पोशाकों को एक बार पहन चुकने के अपराध में तेज़ी से इधर-उधर सरकाते हुये मिसेज़ दास कभी मिस्टर दास पर तो कभी अपनी ख़राब क़िस्मत तो कभी कोख में पल रही नन्हीं जान को कोस रही थीं। मैं इसे जन्म नहीं दे सकती, सोसायटी में मेरा भी कुछ स्टेटस है, मैं तमाशा नहीं बन सकती, मुझे हर क़ीमत पर यह बच्चा गिराना है, गिराना है, गिराना है बस। जब डॉक्टर ने कह दिया कि बच्चा अपंग होने की सम्भावना है तो मै रिस्क क्यों लूँ, क्यों जन्म दूँ, पालूँ, एक अपंग को सम्भालती रहूँ, अपनी ज़िन्दगी का सारा एन्जॉय, शानोशौक़त ख़त्म कर लूँ। अच्छी तरह समझ लो, मैं उन औरतों में से नहीं जो ममता की अन्धी चादर लपेट कर सारी उम्र आया बनी रहती हैं। ग़लती तुम्हारी है तुमने पहले क्यों नहीं बताया था कि अपंगता तुम्हारे यहाँ का ख़ानदानी नस्ल दोष है। कल मेरी क्या पहचान बनेगी, 'अपाहिज की माँ'। हर जगह उसके अपाहिज होने के सवालों का जवाब देती रहूँ, दुनिया में बेचारी बनूँ और फिर ज़ोर से मिस्टर दास के मुँह पर ताली मार कर हाथ जोड़ते हुए कमरे से बाहर निकल गयीं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़ों, तानों के आगे हार मान चुके मिस्टर दास ने हिम्मत करके आख़िर अपनी धर्मपत्नी को जैसे-तैसे समझाया कि बच्चे को इस स्तर पर अब कोख में मारने में कोई समझदारी नहीं, इसमें तुम्हारी सेहत को भी ख़तरा है और ये पाप करने से तो बेहतर है कि कहीं दूसरे शहर में चल कर इसे जन्म दे दो फिर अगर इसमें कोई कमी रही तो देखेंगे क्या करना है, किसी को पता भी नहीं चलेगा क्या हुआ था, नहीं तो कुछ नहीं, सबको सरप्राइज़ देने की बात कह कर वापस आ कर एक शानदार पार्टी देंगे। ख़ैर साहब, मिसेज़ दास मान गयीं, आख़िर जो स्टेटस वो एन्जॉय कर रही थीं उसमें आधा योगदान मिस्टर दास का भी शामिल जो था।

अपने शहर से दूर दोनों ने एक अल्पकालीन पलायन किया। दुनिया से छुप कर कुछ दिनों के बाद मिसेस दास ने एक फूल सी नन्हीं बच्ची को जन्म दिया, मानो सुबह की ओस की कोई बूंद किसी फूल की पंखुड़ी पर हिल रही हो। सही सलामत दोनों पैर, दोनों हाथ, पाँचों अँगुलियाँ कस कर बँधी हुई हथेलियाँ, जिसमें लायी थी अपनी क़िस्मत बंद करके, किसी मूर्तिकार के बनाये हुए से दिख रहे सुंदर नयन नक्श, मुँह, कान, होठ, सब कुछ तराशे हुए सही सलामत और मिसेज़ दास की भांति ख़ूबसूरत नीली आँखें। मगर उफ़्फ़, यह क्या, डॉक्टर ने बताया कि आँखों में रोशनी नहीं है, बच्ची जन्म से अंधी है, इसे हमेशा एक सहारे की ज़रूरत रहेगी।

दो तीन दिन में मिसेज़ दास को अस्पताल से छुट्टी भी मिल गयी। एक अबोध जान को अपने साथ लिये दोनों पति पत्नी अपने शहर की और लौटने लगे। मगर समझौते का दूसरा भाग, जिसका पटाक्षेप अभी शेष था। कार सूनी सड़कों, पहाड़ों और वादियों के बीच दौड़ती जा रही थी, कुछ सूझ नहीं रहा था, अपना शहर आने ओर उस नन्हीं जान की क़िस्मत का फैसला होने में मात्र कोई 40-50 किलोमीटर का ही सफ़र बचा था। तभी रास्ते में पथरीली पहाड़ी से निकलती, पथरीले ऊबड़-खाबड़ किनारे वाली एक नदी बहती दिखी, बस आँखों ही आँखों में एक इशारा हुआ, धीरे से किनारे पर कार रोक दी गयी। कल-कल, झर-झर, करती नदी के पानी में अचानक एक छपाक की आवाज़ हुई और इसी के साथ दो जिस्म पल भर के लिए थर्राये, और एक नन्हीं जान को सामाजिक प्रतिष्ठा की ख़ातिर निपटा दिया गया।

बिना पीछे मुड़े शून्य में अपने कर्म को ताकते हुए दोनों पति पत्नी वापस कार में बैठ बचा हुआ रास्ता पूरा कर

पहुँच गये। एक जगमगाती, चमचमाती, हाउ आर यूँ, लुकिंग स्मार्ट, जस्ट वेट, वेटर वन स्माल विथ आइस ओनली, दिस इज़ लेटेस्ट डिज़ाइन, यस्टरडे आई ऑल्सो ऑर्डर्ड, आई ऑल्सो गिफ़्टेड दी सेम टू माय कज़न, बिकॉज़ इट वाज़ नॉट लुकिंग परफ़ैक्ट ऑन मी, वाली दुनिया में, जो शायद उनके बिना सूनी पड़ी थी। लेकिन मन एक दर्पण होता है जो बार-बार सत्य दिखाता ही रहता है। इंसान का पाप उसका पीछा नहीं छोड़ता, दोनों पति-पत्नी के दिल और दिमाग़, सही किया या ग़लत, के भ्रम का झूला झूलते रहे, समय बीतता गया, अपराध करना आसान होता है मगर अपराध बोध सहना कठिन। नतीजतन मन पर अपराध बोध बढ़ता गया। हँसी अब केवल चेहरे पर थी दिल से नहीं, सारे ऐशो आराम विलासिता के सामान डराने लगे थे मानो कह रहे हों कि हमने सब देखा है, हमसे दूर रहो।

वक्त प्रायश्चित का अवसर भी लाता ही है। बिना किसी किन्तु परन्तु के दो साल बाद मिसेज़ दास ने फिर एक बच्चे को जन्म दिया, एक नन्हें बालक के आगमन पर परिवार में ख़ुशियाँ मनीं। समय के साथ बालक बड़ा होता गया। शहरों के मास्टर प्लान बनने लगे, अब शहर से 40-50 किलोमीटर दूर बहने वाली नदी के किनारे सरकार ने एक ख़ूबसूरत पिकनिक स्पॉट बना दिया था। पाल के किनारे सुंदर बग़ीचे नारियल के पेड़ों के साथ धारा को निहारने के लिए सीमेंट की बेंचें बना दी गयी थीं । सेक्टिंग, साइक्लिंग व वॉकिंग ट्रैक बना दिए गये थे। अब शहर से लोग अपनी-अपनी गाड़ियों का शहर में प्रदूषण फैलाने के बाद, अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध हवा लेने यहाँ आने लगे थे। दिन भर आराम करके थकने वाले वी आई पी शाम सुबह थोड़ी जॉगिंग, वॉकिंग और रनिंग करके अपनी एनर्जी बर्न कर अपनी डायबिटीज़ और वज़न कम करने के प्रयास में लगे थे।

पास ही स्थित एक अनाथालय से बच्चों को भी यदा कदा खेलने-कूदने नदी किनारे लाया जाता था। इन्हीं बच्चों में एक लड़की भी आती थी नाम था निखार, जो देख नहीं सकती थी, इसलिए वह भी नदी किनारे बैठकर दूसरों की पदचाप और हँसी ठिठोली को मन की आँखों से देख आनन्द में शामिल हो जाती थी। इसी ख़ुशनुमा माहौल के बीच एक दिन चार-पाँच लड़के भी अपनी-अपनी मोटे टायर और गेयर की रेसर साइकिलों पर नदी किनारे घूमने आये, जलधारा से टकराकर आ रही सुहावनी हवा ने मस्ती का आलम और बढ़ा दिया, ढालदार रास्ते पर साइकिल भगाने का मज़ा ही अलग होता है, बस फिर क्या था सभी चेतावनी-पट्टिकाओं की अवेहलना कर वो सब भी ख़तरनाक ढालदार रास्ते पर साइकिल भगाने लगे। अंधी बच्ची, निखार अब तक उस गहरे पानी वाले ख़तरनाक मोड़ और पानी के तेज़ बहाव के क़िस्से सुन सुन, उस जगह से अच्छी तरह परिचित हो चुकी थी और पदचाप सुन कर आने की रफ़्तार का अनुमान लगाना उसे खूब आ चुका था। उस दिन भी मस्ती में मगन लड़कों में से एक लड़का, ख़तरे से अनजान साइकिल दौड़ाने में मस्त था की अचानक ढाल पर साइकिल बेकाबू हो गयी, तेज़ रफ़्तार साइकिल अब सीधी मौत के ढाल की ओर भाग रही थी, घबराहट में उसके चिल्लाने की आवाज़ और सब तरफ अरे पकड़ो कोई, रोको कोई, अरे मर जायेगा, बह जायेगा, का शोर मच रहा था कि तभी अचानक पेड़ के नीचे बैठी निखार ने आँखों वालों से ज़्यादा ख़तरे को भाँप लिया, और ये क्या, उम्मीद के विरुद्ध आज तो वो दौड़ कर साइकिल के एकदम आगे आ गयी ओर एक झटके में सवार और खुद टकरा कर ज़मीन पर और साइकिल भौतिक विज्ञान के कई सिद्धान्तों का पालन करते हुए सीधी जलसमाधि में। थोड़ी बहुत चोट ख़रोंच के साथ दोनों उठे और सांत्वना, शाबाशी और धन्यवाद देने वालों के साथ ही कुछ ख़ास अंदाज़ वाले कि अजी मैं तो ख़ुद वहाँ से दौड़ता हुआ आया, मैं तो सबसे पहले चिल्लाया, मैं तो ख़ुद पकड़ने ही वाला था आदि-आदि की तमाशबीन भीड़ आती गयी जाती गयी।

ख़बर लड़के के माता पिता तक भी पहुँची। बस अमीरी ने अँगड़ाई ली और दिल में उस बच्ची से मिलने और शुक्रिया गुज़ारने, कुछ इनाम आदि देने का ख़्याल उनको उस अनाथालय तक खींच लाया जहाँ निखार रहती थी। निखार को पास बुला कर, बहादुरी के साथ साथ खूबसूरती की तारीफ़ों के क़सीदे पढ़े जाने लगे, कभी माथे पर तो कभी सर पर हाथ फेरने के साथ धन्यवाद और उपहार दिए

जाने लगे। बातों-बातों में अनाथालय इंचार्ज ने बताया की किस तरह कोई 15-16 साल पहले उसे नदी में फैंक गया था जहाँ कैसे झाड़ियों में ज़िन्दा फँसी हुई मिली और तब से यही अनाथालय उसका घरबार है। दोनों पति पत्नी ने एक दूसरे के सुन्न पड़ चुके चेहरे को देखा। गला सूख गया था, आवाज को लकवा मार गया था। तो ये उनकी वही बेक़सूर पहली सन्तान है जिसे वो सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर मौत दे चुके थे। जल्दी जल्दी दोनों उठकर काँपते क़दमों से कार की तरफ़ और फिर शहर और घर की तरफ लौटने लगे। वो अतीत, जिसे वो पीछे छूटा समझ रहे थे, अब पुनर्जन्म ले कर मिस्टर और मिसेज़ दास के सामने खड़ा था। उनका सुपुत्र सब बातों से अनजान, बस ऐसे निर्मोही माँ बाप को कोसने, काल्पनिक सवाल करने में लगा था जिनके जवाब भी देना कुछ ख़ुद से तो कुछ सत्य से कठिन लग रहे थे। घर के सारे सुख-साधन, नौकर-चाकर, पालतू महँगे कुत्ते, घोड़े, विदेशी गाय भैंस सब उनके कमाए वैभव को भोग रहे थे और उनका अपना ख़ून माँ बाप के होते एक अनाथालय में दान और दुनिया के रहमो-करम पर पल रहा था, जहाँ कितनी ही बार उसने अपने माँ-बाप के अहसास उनके कर्म की वजह की कल्पना कर ख़ुद को अकेले ही दिलासा दे कर नियति से समझौता किया होगा।

घर पहुँचने पर मिस्टर और मिसेज़ दास की बरसों की दबी आह आज फूट पड़ी, गले लग कर बरसों से दबा आँसूओं का बादल तेज़ गड़गड़ाहट के साथ खूब बरसा, आँखें मानों एक दूसरे से शिकायत कर रही थीं कि तुमने एक बार भी उस दिन मुझे रोका क्यों नहीं, क्यों नहीं बोला की ये ग़लत है। दोनों एक-दूसरे की तरफ़ देख कर एक साथ बोल उठे हम इस बच्ची को वापस घर लायेंगे उसका हक़ उसे देंगे, उसे गोद लेंगे। एक राज, राज के साथ पैदा हो कर राज ही राज में सुधर जायेगा। दूसरे ही दिन सारे काम-काज, सामाजिक वादों को तिलांजलि दे कर दोनों वापस अनाथालय की ओर चल पड़े, गोद लेने की प्रक्रिया शुरू हुई। देर से ही सही, कहीं धक्का मारकर, कहीं खींचकर, तो कहीं दौड़ा कर सरकारी औपचारिकताओं का सफ़र पूरा हुआ, और आज अनाथालय के अन्य बच्चों और साथियों के बीच ख़ुशी और ग़म के आँसूओं के साथ एक बार अनाथालय के उस भवन को, जिसने उसे उस समय अपनाया जब उसके अपनों ने उसे ठुकरा दिया था। निखार ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से विदाई ली। उस महँगी कार में जिसमें बैठने का सपना भी उसने कभी नहीं देखा, आज अपने माता-पिता के साथ अपने घर जा रही थी।

अब समाज और सामजिक प्रतिष्ठा का भय दिल से निकल चुका था। दूसरे दिन स्वागत में एक बड़ी पार्टी का आयोजन हुआ, अब बड़े ही नहीं मौहल्ले के छोटे लोग भी पार्टी में आये और हर तरफ़ बस आवाज़ ही आवाज़ गूँज रही थीं व्हाट ए बोल्ड डिसीज़न सर, कांग्रेचुलेशन और महिलायें तो बस ठोड़ी छू-छू कर, हाय मैं मर जावाँ, कितनी सुंदर आँखें हैं, ओ गॉड मेनू भी ऐसी शौणि कुड़ी देना, मिसेज़ दास, तुम्हारी बच्ची कितनी प्यारी है, मिसेज़ दास यू आर रीयली लक्की। भाई को बहन मिल गयी थी, उसके सारे दोस्त आज दीदी-दीदी कह कर क़िस्से और ठिठोली कर रहे थे। समाज के मूड के दबाव में अख़बार और मीडिया भी शान में सुर में सुर मिला रहे थे, किन्तु दोनों पति-पत्नी ही जानते थे कि ये और कुछ नहीं एक प्रायश्चित था। दिल से अपराध बोध कुछ उतर गया था साथ ही उतर गया था खोखली सामाजिक प्रतिष्ठा का नशा, जिसके झूठ में कई साल तक ख़ुद उन्होंने काटी थी एक सजा।

❑❑

'माँ' कोई शरीर नहीं

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, सीमा शुल्क, जयपुर

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक सत्य है
जीवन का
अस्तित्व का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक अहसास है
ममता का
स्नेह का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक अवतार है
कर्म का
भक्ति का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक प्रकाश है
शिक्षा का
संस्कार का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक बल है
मन का
आत्मा का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक प्रमाण है
ईश्वर का
अलौकिक का

'माँ'
कोई शरीर नहीं
एक चक्र है
अनादि का
अनंत का

❑❑

पापा तेरी ज़रूरत है

पापा सेहत के लिए
तेरी ज़रूरत है
हमपे थोड़ी दया के लिए
मालिक की ज़रूरत है

अँगुली तेरी पकड़ के
जीवन रस्ता पार किया
नाव अब भी डगमग करती
माझी की ज़रूरत है

तेरे प्यार की जेब से
हमने ख़ुशियाँ झाड़ी हैं
अब सब ख़ुशियों के लिए
दाता की ज़रूरत है

तूने सब कुछ अपना
हमपे लुटा दिया
अब अनमोल धरोहर को
ताले की ज़रूरत है

तेरे प्यार के बदले
कभी दिल तेरा दुखा दिया
अब तेरे नालायक़ को
माफ़ी की ज़रूरत है

❑❑

अनुसंधान : कुछ बिंदु

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय, जयपुर

किसी भी अपराध की तह तक जाने में अनुसंधान का बहुत महत्त्व है, विशेषत: आर्थिक अपराध में अनुसंधान की प्रक्रिया अन्य अपराधों के अनुसंधान से कुछ अलग और अपेक्षाकृत जटिल है। इसमें कुछ विशेष स्किल अपेक्षित है। आर्थिक अपराध उन लोगों द्वारा किये जाते हैं जो पढ़े-लिखे, क़ानून के जानकार और क़ानून की प्रक्रिया और उसकी ख़ामियों को पूरी तरह जानने वाले होते हैं। बहुत से प्रोफ़ेशनल्स उनके सलाहकार होते हैं। इसके मुक़ाबले अनुसंधानकर्ता, संसाधन और ज्ञान की दृष्टि से बहुत पीछे होता है। पर उसे किसी भी परिस्थिति में काम करने का जुनून, उन लोगों से अलग करता है।

वास्तव में अनुसंधानकर्ता का आंतरिक जज़्बा ही उसे प्रकरण की तह तक पहुँचाने में प्रेरणास्रोत बनता है और उसे जो आंतरिक ख़ुशी मिलती है, वो उसमें विश्वास भरती है, वरना कई बार तो उसे पारिवारिक दायित्वों की भी उपेक्षा करनी पड़ती है और कार्यालय में भी माहौल सदैव पक्ष का नहीं रहता।

सबसे पहले हमें अनुसंधान की सीमा का ध्यान रखते हुये, निम्नलिखित कुछ आधारभूत बिंदु ध्यान में रखने चाहिये:-

1. अनुसंधान की सीमायें :

(i) आर्थिक अपराधी अन्य अपराधियों से अलग समाज का कोई लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति होता है इसलिये जब तक पूरा पुख़्ता असलाह उसके ख़िलाफ़ इकठ्ठा न हो जाये, हाथ डालना उचित नहीं होता।

(ii) अपराधी आर्थिक दृष्टि से बहुत संपन्न होने के कारण, अहंकारी भी होता है। उसमें ये घमंड होता है कि वो पैसे के बल पर सब कुछ ख़रीद सकता है और वो अनुसंधान को प्रभावित करने के लिए अपने रसूख़ों का भी भरपूर इस्तेमाल करता है। ये भी है कि हम सामाजिक जीवन जीते हैं इसलिये जो व्यक्तिगत सम्बन्ध होते हैं उनका इस्तेमाल किया भी जाता है, किंतु खेद की बात ये भी है कि अपराधी की सहायता और सिफ़ारिश के लिये कई बार बड़े लोग भी अपना प्रभाव डालने में नहीं हिचकते।

(iii) कभी-कभी किसी अधिकारी को उसके साहस और ईमानदारी के कारण अनुसंधान से हटवाने के लिये उसके विरुद्ध झूठी शिकायतों और धमकियों का भी सहारा लिया जाता है।

(iv) प्रकरण को छोड़ने या कमज़ोर करने के लिए, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर मौद्रिक प्रलोभन देने का प्रयास भी किया जाता है। अनुसंधान स्तर पर मामला बनता न देख, उससे ऊपर मैनेज करने को भी अपराधी तत्पर रहते हैं।

(v) विभिन्न एजेंसीज़ में तालमेल और संवाद का अभाव पाया जाता है। एक एजेंसी दूसरी एजेंसी के काम से वाक़िफ़ नहीं है। बड़े स्तर पर कोई संवाद होता भी है, तो वो निचले स्तर तक नहीं पहुँच पाता।

(vi) एजेंसीज़ में सूचना साझा करने में एक झिझक होती है, एक भय सा होता है कि कहीं उनकी कोई कमी न हो। इस बात को अपराधी बख़ूबी जानता भी है और इसका सीधा फ़ायदा उठाता है। डिस्कवरी चैनल पर शेर और टाइगर के शिकार की तकनीक में जो अंतर होता है वो यहाँ दिखलाई देता है। जहाँ शेर मिल कर रणनीति बना कर शिकार करते हैं, वहीं दूसरी और टाइगर अलग-अलग शिकार करते हैं। अनुसंधान में भी मिल कर काम करने की ज़रूरत है। हर एजेंसी की अपनी शक्तियाँ विधि द्वारा निर्धारित हैं, उदाहरण के लिये पुलिस के द्वारा संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जा सकता है, वहीं कुछ एजेन्सीज़ के लिए युक्तियुक्त विश्वास मानदंड होता है।

(vii) अनुसंधान में नई तकनीक के इस्तेमाल की कमी से बाधा आती

है। कई बार वरिष्ठ व्यक्ति अनुभवी तो होता है पर कंप्यूटर का अच्छा जानकार नहीं होता ।

(viii) कई बार अधिकारियों के अहं भी टकराते हैं। हो सकता है कि कोई छोटा अधिकारी, जो मामले को सीधा देख रहा है, उच्च अधिकारी से ज्यादा जानता हो या अनुभवी हो, ऐसे में अनावश्यक निर्देश अनुसंधान को भटका देते हैं और संबद्ध अधिकारी को झल्लाहट और कुंठा भी होती है । संबद्ध अधिकारी को अपने अनुसार काम करने की छूट होनी चाहिये, उस पर विश्वास किया जाना चाहिये।

(ix) इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी भी अधिकारी की ऊर्जा अनावश्यक बातों में व्यय करवाती है। संसाधन उसे उपलब्ध करवाए जाने चाहिए, जिसे वाक़ई उनकी ज़रूरत है।

(x) अनुसंधान समयबद्ध सीमा में करना होता है, ताकि समय पर माँग जारी की जा सके और न्यायालय में वाद भी दायर किया जा सके।

2. अनुसंधान की तकनीक :

(i) आसूचना का महत्त्व : आसूचना का अनुसंधान में बहुत महत्त्व है। एक दूसरे से मिलने से, बातचीत करने से बहुत सी बातें पता चलती हैं, पता नहीं किसी व्यक्ति का कहा गया कौनसा कथन हमें अनुसंधान में सहायक हो जाये। इसलिए मिलने-जुलने का दायरा बढ़ाना चाहिए। घर बैठ कर तो कोई सूचना मिलने से रही। एजेंसीज़ के मध्य अनौपचारिक तौर पर आसूचना साझा करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए। हर एजेंसी काम तो वो ही करेगी, जो उसे करना है, पर अगर कोई ऐसी बात पता लगती है जो दूसरी एजेंसी के लिए काम की हो सकती हो तो वो रीयल टाइम में साझा की जानी चाहिए।

(ii) आधुनिक संचार तकनीक का प्रयोग : तकनीकी का काफ़ी उन्नयन हो गया है। इंटरनेट पर भी बहुत कुछ अच्छा उपलब्ध है। बहुत से सॉफ़्टवेयर्स हैं जो डेटा को कई प्रकार से विश्लेषित कर सकते हैं, उनका इस्तेमाल होना चाहिए।

(iii) नई मॉडस ऑपरेंडी से वाक़िफ़ होना : अपराधी नित नए तरीक़े इस्तेमाल करता है। उनकी जानकारी हेतु सदैव चौकन्ना रहना चाहिए।

(iv) अंतरराष्ट्रीय स्तर की जानकारी : जब से मानव है, तब से अपराध भी है। यह भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है। अपराधियों का अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क होता है। उदाहरण के लिए जब तक आयातक और निर्यातक में साँठगाँठ नहीं होगी, सीमा शुल्क संबंधी अपराध नहीं हो सकते।

बहुत से ऐसे संगठन हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत हैं। फ़ाइनेंशियल एक्शन टास्क फ़ोर्स भी इस क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। वो हर देश के आर्थिक अपराधों की केस स्टडीज साझा करते हैं। इनकी जानकारी बहुत लाभदायक हो सकती है।

(v) मानवीय संसाधनों का विकास : कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण का बहुत महत्त्व है। प्रशिक्षण उनके लिए बहुत आवश्यक है, जो वास्तव में उन चीज़ों से संबद्ध होते हैं। कभी-कभी उच्चाधिकारियों को विदेश में भी प्रशिक्षण का अवसर मिलता है, किंतु जो छोटे स्तर के अधिकारी हैं, उनके लिए ऐसा संभव नहीं हैं, तथापि ऐसा किया जा सकता है कि ऐसे अधिकारी कनिष्ठ अधिकारियों से अपने अर्जित ज्ञान को साझा करें।

(vi) बयान : अनुसंधान में यह बिंदु सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसकी भूमिका न्यायालय में वाद दायर करने और प्रकरण को पुख़्ता करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पुलिस को दिए गए बयान को साक्ष्य के रूप न्यायालय में स्वीकार नहीं किया जाता, पर अन्य एजेंसीज़ यथा सीमाशुल्क, प्रवर्तन निदेशालय के समक्ष दिए बयान मान्य हैं, ऐसे में उनका महत्त्व बहुत अधिक है। बयान के लिए निम्न बिंदु महत्वपूर्ण हैं :-

(a) किसी एजेंसी, विशेषत: पुलिस के समक्ष दिए बयानों के बारे में ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए जिससे कि कोई विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो और उससे उस

एजेंसी का केस कमज़ोर पड़ जाये, उदाहरण के लिये अभियुक्त न्यायालय में यह आड़ ले सकता है कि उसके सीमा शुल्क के समक्ष दिए बयान ही मान्य हैं। इससे उस एजेंसी से पृथक, स्वतंत्र अनुसंधान हो पाता है, हालांकि अन्य एजेंसीज के समक्ष दिए गए बयान भी पढ़ लेने चाहये, इससे केस को गहराई से समझने में मदद मिलती है।

(b) यद्यपि, बयान के लिए कोई नियम निश्चित नहीं किये जा सकते, तथापि यदि संभव हो तो एक विस्तृत प्रश्नावली बनाना उचित रहता है, ताकि कोई बिंदु रह न जाये, क्योंकि बार-बार बयान लेना संभव नहीं हो पाता, विशेषत: यदि व्यक्ति जेल में बंद होता है, तो बयान हेतु न्यायालय की अनुमति लेनी होती है। प्रश्नावली उच्च अधिकारियों से भी अनुमोदित करवा लेनी चाहिए। अपराधी का फ़ैमिली ट्री तैयार करना चाहिए जिसमें उसके परिवार, रिश्तेदार, नौकर-चाकर, जानकार आदि का भी विवरण दर्ज कर लेना चाहिए, इससे अपराध में शामिल सहयोगियों की जानकारी भी मिल जाती है।

(c) जहाँ तक संभव हो, यह प्रयास किया जाना चाहिए कि बयान के लिए प्रस्तुत व्यक्ति सहज महसूस करे और उसे अनुसंधान में सहयोग करने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए ।

(d) प्रश्न, क्रम के अनुसार नहीं पूछने चाहिए। अर्थात बीच-बीच में ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जिससे बात-चीत का क्रम टूटे और बाद में किसी प्रश्न के उत्तर में कोई विरोधाभास मिले। इससे यह पूछा जा सकता है कि आपने अमुक प्रश्न के जवाब में यह बात कही है और अमुक प्रश्न के जवाब में यह, इनमें अंतर क्यों है? तो व्यक्ति वो स्पष्ट नहीं कर पाता और इससे सत्य तक पहुँचने में मदद मिलती है।

(e) कभी-कभी व्यक्ति तनाव में भी आ जाता है। ऐसे में उसे बीच-बीच में पानी आदि भी पूछते रहना चाहिए क्योंकि यह बहुत आवश्यक है कि जब तक व्यक्ति विभाग में है तो वो स्वस्थ रहे, अन्यथा अनावश्यक समस्याएं आ सकती हैं और व्यक्ति तबीयत ख़राब होने और उस पर दबाव डाले जाने का आरोप लगा सकता है। उल्लेखनीय है कि वह व्यक्ति क़ानून का अपराधी है, उससे हमारी कोई निजी दुश्मनी नहीं है, उसकी मानवीय गरिमा है और सत्य तक पहुँचना बयान लेने वाले अधिकारी की ज़िम्मेदारी है। बीच में यदि व्यक्ति सहयोग न करे तो सख़्त लहजे में भी बात की जा सकती है, तथापि सख़्ती की अपेक्षा व्यक्ति को भावुक करके, उसके परिवार के बारे में बात करके, उसके मन की बात आसानी से निकलवाई जा सकती है। अक़्सर ऐसा होता है कि कई बार वो व्यक्ति, विशेषकर जो जेल में होता है, अपनी बात कहना भी चाहता है, पर उससे कभी कोई बात किसी एजेंसी द्वारा हल्के माहौल में पूछी ही नहीं गयी होती। आर्थिक अपराधी अन्य फ़ौजदारी अपराधियों से भिन्न प्रवृत्ति के होते हैं और कई बहुत शातिर भी नहीं होते, जल्दी से जल्दी पैसा कमाने के लालच में या मजबूरी में भी अपराध में लिप्त हो जाते हैं। कुछ मामलों में उन्हें

भावुक करके तथ्य पता लगाए जा सकते हैं। अक़्सर लोग बयान के दौरान रोने भी लग जाते हैं, इनमें महिलायें और पुरुष दोनों ही होते हैं।

(f) महिलाओं के बयान लेते समय कुछ विशेष सतर्कता बरती जानी ज़रूरी है। बयान के दौरान पूरे समय महिला अधिकारी की उपस्थिति अनिवार्यत: होनी चाहिए और उनके बयान शाम होने से पहले पूरे हो जाना सही रहता है। इसलिए महिलाओं को बयान हेतु दिन के प्रथम अर्द्ध में ही बुलाया जाना चाहिये।

(g) यदि किसी ऐसे व्यक्ति के बयान लिए जाने हैं जो जेल में है तो न्यायालय की अनुमति तो लेनी ही होगी और जब बयान लेना हो तो जेल अधिकारियों से बात करके यह पता कर लेना चाहिए कि वो उस दिन जेल में उपलब्ध है कि नहीं क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि किसी दिन उसकी कोर्ट में पेशी होनी होती है या किसी अन्य कारण से बयान लेना संभव नहीं होता।

(h) जेल में बयान के लिए न्यायालय के आदेश के साथ जेल अधिकारियों को पत्र दिया जाना चाहिए और बयान हो जाने के बाद जेल अधिकारियों को व्यक्ति को वापस सुपुर्द करने का पत्र दे कर प्राप्ति लेनी चाहिए।

3. दस्तावेज़ का रख रखाव और प्रस्तुतीकरण :

(i) पत्रावली में एक फ़ैक्ट शीट लगानी चाहिए जिसमें सभी तथ्य संक्षिप्त रूप में अपडेट करते रहना चाहिए।

(ii) कभी-कभी दस्तावेज़ अधिक होते हैं, ऐसे में इंडेक्सिंग करके छोटे-छोटे फ़ोल्डर बना लेने चाहिए।

(iii) न्यायालय में वाद दायर करते समय सभी मूल दस्तावेज़ जमा करवाने होते हैं, ऐसे में एक सैट फ़ोटो कॉपी और स्कैन्ड फॉर्म में भी रखना उचित रहता है, जो पूरक वाद दायर करने हेतु सन्दर्भ के लिए भी उचित रहता है। वैसे वाद दायर करने के उपरांत उसकी सत्यापित प्रति न्यायालय से ले लेनी चाहिए।

(iv) न्यायालय में वाद दायर करते समय या कारण बताओ नोटिस बनाते समय सरल भाषा का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बहुत अधिक कठिन भाषा से या बहुत तकनीकी भाषा के इस्तेमाल से मूल बात समझने में दिक़्क़त आती है और उसके एक से अधिक अर्थ भी निकाले जा सकते हैं।

(v) छोटे-छोटे वाक्यों में बिंदुवार, पैरावार, सारणियों और चित्रों के माध्यम से केस समझाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इससे तथ्यों का विश्लेषणात्मक चित्रण हो जाता है।

(vi) कोई भी तथ्य या क़ानूनी प्रावधान सीधे इन्टरनैट से डाउनलोड करके उद्धृत करने की बजाय उसका पहले मिलान कर लेना चाहिए, कई बार इंटरनेट से डाउनलोडेड सामग्री में त्रुटियाँ भी होती हैं और इससे विशेषत: न्यायालय के समक्ष बहुत असहजता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

(vii) केस को इस हद तक पुख्ता करने का प्रयास किया जाना चाहिए कि न केवल न्यायनिर्णय या न्यायालय में दायर वाद में ही सफलता मिले, बल्कि अपील तक में भी व्यक्ति को कोई राहत न मिल सके।

इस प्रकार एक एक्शन प्लान बना कर, ठोस सबूत के आधार पर क़ानून के दायरे में रहते हुए और उक्त कुछ बिंदुओं को ध्यान में रखने पर अनुसंधान सुगमता से हो सकता है तथा केस विभागीय न्यायनिर्णयन के लिए और न्यायालय के समक्ष ठोस तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है ।

❑❑

जिंदगी

कल रात जिंदगी से मेरी मुलाकात हो गयी
आँखों में आँखे डाल उससे सब बात हो गयी।

खट्टी-मीठी यादों की जब डायरी खुली
होठों पे हँसी आँखों से बरसात हो गयी।

बाँहों में बाँहे डाल मुझसे वह खेलती रही
उसकी हर एक अदा मेरे लिए सवालात हो गयी।

बदले है सभी रंग ये अपने मिजाज से
काँटों के बीच फूलों सी मेरी हालात हो गयी।

गुंचे चटकते देखा जब अपनी ख्वाब में
ऐसा लगा मौसम ए बहार की शुरुआत हो गयी।

मिलती रही बिछड़ती रही वह उम्र राह पे
जब भी मुड़ी ये पीछे तो वारदात हो गयी।

दायरे भी खींचे है उसने अपने हिसाब से
जिंदगी 'मंजूर' अब अपनी एक हवालात हो गयी।

❑❑

रावण के पुतले का संवाद

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

मुझ रावण के पुतले को कब तक तुम जलाओगे
स्वयं अहंकारों को त्याग कब तुम शीश झुकाओगे।

पल रहा काम, क्रोध, लोभ, मोह व माया जो अंदर
मेरे उन दुर्गुणों पर कब तुम विजय पताका फहराओगे।

अन्यायी था जो मैं रावण तभी तो मुँह की खाया था
छुपे अपने अंतर्मन के अन्यायी को कब तुम हराओगे।

प्यारे अपने भाई को मैंने लात मार भगाया था
अपने भ्राता-बंधुओं को तुम कब प्यार से गले लगाओगे।

घृणा की ज्वाला से स्वयं मैंने अपनी लंका में आग लगाया था
अंदर की धधकती अपनी घृणा को कब तुम शान्त कराओगे।

समस्याओं से निश्चिंत कुम्भकरण को मैंने झकझोर जगाया था
देश की अपनी समस्याओं से तुम कब जागरूक बन पाओगे।

शबरी के बेर फल खा राम ने अपना प्रेम रस बरसाया गया
प्रभु राम के उन समता संदेशों को कब तुम अपनाओगे।

सीता हरण की एक भूल ने मेरा पूरा अस्तित्व मिटाया था
नारी को नित्य चीरहरण से कब तुम बचाओगे।

मैं तो लंकापति रावण एक खल और असुर गुणधारी था
बनते राम के अनुयायी कब तुम पुरुषोत्तम कहलाओगे।

❑❑

पहला सुख निरोगी काया

अरुण भटनागर, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

एक सुखमय जीवन को जीने के लिए सबसे पहला व प्रमुख सुख है – निरोगी काया। अगर हम उस पहले सुख से ही वंचित रहेंगे तो दुनिया का कोई भी सुख हमे आनंद नही दे पाएगा। जहाँ एक निरोगी व्यक्ति अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए रोज़ी–रोटी कमाने से लेकर, विद्या अर्जित करने और कला–कौशल के क्षेत्र में प्रवेश कर कहीं भी सफलता प्राप्त कर सकता है वहीं रोगी व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाए होते हुए भी उनका उपयोग नहीं कर सकता है।

हम हिन्दुस्तान को सुखी और समृद्धशाली बनाने की बात रोज़ करते है पर जब तक प्रत्येक व्यक्ति 'पहला सुख निरोगी काया' प्राप्त नहीं करता, तब तक व्यक्ति, समाज एवं देश की उन्नति और प्रगति नहीं हो सकती। देश का स्वास्थ्य बड़े–बड़े अस्पतालों और उनमें उपलब्ध यंत्रों व दवाओं पर निर्भर नहीं करता अपितु यह कुछ सरल एवं बुनियादी बातों पर निर्भर करता है, जिनमे पहली बात है–संतुलित भोजन। आप स्वास्थ्य के संबंध में किसी भी दृष्टिकोण से विचार क्यों न करे, अंत मे आप भोजन के ही प्रश्न पर पहुँचते है क्योंकि भोजन का स्वास्थ्य से बहुत घनिष्ठ संबंध है।

मनुष्य जो कुछ खाता है, उसी से उसका शरीर बनता है अर्थात मनुष्य जैसा भोजन करता है वैसा ही उसका शरीर बनता है। मनुष्य ने अपना हर काम विज्ञान से प्रभावित होकर उन्नत किया है, पर भोजन के संबंध मे उसका दृष्टिकोण अब तक अवैज्ञानिक ही है। हम जैसा–तैसा भोजन आँखें बंद करके करते है एवं उसके संबंध मे कोई अध्ययन नहीं करते। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है की लोग पाचन की गड़बड़ी, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, क्षय तथा अनेक रोगों से पीड़ित रहते हैं।

सोचिए, अगर हम कार या स्कूटर को पेट्रोल की जगह किसी और तरल पदार्थ से चलाने का प्रयास करेंगे तो उसका क्या परिणाम होगा? परंतु हम मानव रूपी मशीन में जो सामने आता है, उसे बिना सोचे समझे खाते है तो फिर हमारी कार्यशक्ति एवं शरीर का विकास पूरा–पूरा कैसे होगा? कुदरत के क़ानून को समझकर इसके नियमों का पालन करते हुए ही, अपने शरीर एवं मन दोनों को स्वस्थ रखा जा सकता है। स्वस्थ रहना बहुत सरल हैं, सस्ता है जबकि बीमार रहना महँगा है। स्वस्थ सौभाग्यशाली रहता है, किन्तु रोग दुर्भाग्य लाता है। जिस प्रकार संसार की सभी चीजें नियमों से बँधी हैं उसी प्रकार मनुष्य जीवन, उसका स्वास्थ्य और रोग भी नियमों से बंधे हैं। मनुष्य जब प्रकृति के नियमों को तोड़ता है तो हो सकता है कि प्रकृति तुरंत दंड ना दे, पर दंड निश्चित है, जो उसे बेआरामी, रोग, कुसमय में बुढ़ापा एवं अंत मे अकाल मृत्यु के रूप में भोगना पड़ता है।

स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्राकृतिक आहार के साथ साथ शरीर को भरपूर आराम देना भी आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिए 6 से 8 घंटे की नींद लेना आवश्यक है। नियमित धूप का सेवन करना चाहिए। शरीर में पानी की कमी ना होने दें। नियमित प्राणायाम, योग व्यायाम करें और सकारात्मक विचार रखे। सुबह के नाश्ते मे अंकुरित अनाज, मौसमी फल, किशमिश, अखरोट, खजूर आदि शामिल करें। भोजन में चोकर समेत आटे की रोटी, उबली सब्ज़ियाँ, सलाद आदि का प्रयोग करें। चाय, कॉफी, चीनी, सिगरेट, शराब, तंबाकू के सेवन से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में कमी आती है। मानसिक तनाव, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, क्रोध आदि नकारात्मक विचारों का भी प्रतिरोधक क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

❑❑

सृष्टि-चक्र

शालिनी वर्मा,
अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर

वह वृक्ष तन कर खड़ा था।
बलिष्ठ डालियों और चटक हरी पत्तियो के साथ।
जड़ों के पास से नई-नई पौध फूटी,
धीरे-धीरे बड़ी हुई, हल्की हरी मुलायम कोपलो के साथ।
बढ़ता गया वह नन्हा सा पौधा,
सहारा लिया बड़े वृक्ष की सघन छाँह का।
शायद उसकी जड़ों से पोषण भी लिया ही होगा।
धूप, वर्षा, सर्द मौसम और आँधी तूफान, ओलों से बचाता रहा वह वृक्ष!
पौधा बढ़ रहा था नए उत्साह और उल्लास से,
छोटा सा पौधा, बड़े वृक्ष के कंधे तक आ गया था!
फिर शनै: शनै: पत्तियाँ पीली और तना खुरदुरा होने लगा बड़े वृक्ष का
विशाल वृक्ष बूढ़ा हो रहा था,
पत्तियाँ झड़ने लगी थी।
उधर पौधा वृक्ष का रूप ले रहा था।
बूढ़ा वृक्ष झुकने लगा था,
फिर एक दिन बारिश-आँधी में भरभरा कर गिर गया।
उसकी जगह वह नया वृक्ष अपनी डालियों को फैलाकर सृष्टि के नियम को दोहरा रहा था।
मनुष्य भी विदा हो जाता है इसी तरह सृष्टि को बच्चों के रूप में अपनी अमानत सौंप कर!
शायद नई भूमिका का निर्वहन करने या अनंत में सदा के लिए विलीन होने।

❑❑

गिरेबाँ

दीपक पंजाबी,
अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं
सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

आजकल हर ज़ेहन में एक बेआरामी सी है कि हर वक़्त
नज़र में हो किसी का गिरेबाँ
हाथ बेसाख़्ता फड़कने से लगते हैं देखते ही किसी का भी गिरेबाँ

छोटा गिरेबाँ -बड़ा गिरेबाँ, काला गिरेबाँ -सफ़ेद गिरेबाँ,
अमीर गिरेबाँ -गरीब गिरेबाँ
हर तरफ हर किस्म के दिखते हैं हमको बस गिरेबाँ ही गिरेबाँ

दरअसल आजकल हमको लोग दिखते हैं कम और ज़्यादा
दिखते हैं गिरेबाँ
या फिर आँखे छोटी हो गई हमारी, क्योकि पूरे इंसान नहीं
दिखते, दिखता है तो सिर्फ उनका गिरेबाँ

सुबह निकलते तो हैं आमद को, पर काम छोड़ ढूँढने लगते
हैं फिर कोई गिरेबाँ
ट्रैफ़िक का गिरेबाँ, मातहत का गिरेबाँ, मालिक का गिरेबाँ,
दोस्तों का गिरेबाँ और ज़िंदगी का गिरेबाँ

मगर इन सबके बीच शायद हम कुछ भूल जाते हैं
हाँ, हम भूल जाते हैं कि दुनिया में ख़ाली मचल रहे हैं
लाखों हाथ और हमारे पास भी एक गिरेबाँ
जो सिल रखा है हमने कब से ताकि हम कभी ना झाँक सकें
ख़ुद अपना गिरेबाँ

ग़र हम करें किसी रोज़ जुर्रत और चाक कर दें अपना गिरेबाँ
तो पाएंगे अंदर बिखरी पड़ी... कितनी नाकामियां,
ख़ुदग़र्ज़ियाँ और फ़रामोशियाँ

कि जिनको कभी हम गिन भी ना पाएं
इतनी बेअज़ीज़ और इतनी बेनूर ज़मीर और वजूद की सरगोशियां

उस दिन के बाद शायद कभी ना हो तमन्ना पकड़ने की
किसी का भी गिरेबाँ
क्यों कि फिर ना रहेंगे ख़ाली हमारे हाथ, और इनमे रहेगा
हमेशा एक गिरेबाँ

तेरा गिरेबाँ, मेरा गिरेबाँ और.....हमारा गिरेबाँ।

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में हिंदी पखवाड़ा-2019 : एक रिपोर्ट

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में दिनांक 01.09.2019 से 15.09.2019 तक राजभाषा पखवाड़ा आयोजित किया तथा इस दौरान मुख्य समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में विभाग के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री राकेश कुमार शर्मा, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर-जोन, जयपुर ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। कार्यक्रम में श्री प्रमोद कुमार सिंह, प्रधान आयुक्त ने सभी संबोधित किया तथा राजभाषा संबंधी प्रगति विवरण प्रस्तुत किया तथा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया ।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' के 26वें अंक का विमोचन भी किया गया।

इस कार्यक्रम में श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी बहुत ही सरल, सहज एवं सर्वग्राह्य भाषा है अत: हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी की छोटी-छोटी टिप्पणियाँ एवं पत्रादि का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए जिससे राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने का वातावरण सृजित हो सके तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीनों आयुक्तालयों में संयुक्त रूप से निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए जिनका विवरण निम्नानुसार है :-

हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता

	पुरस्कार	*नाम एवं पदनाम*	*राशि रु. में*
1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री बिमल कुमार चौधरी, निरीक्षक	2100/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री राजेश पारीक, अधीक्षक	1600/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री हेमंत कुमार शर्मा, निरीक्षक	1300/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	सुश्री शालिनी वर्मा, अधीक्षक	500/-

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	सुश्री शालिनी वर्मा, अधीक्षक	1500/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री राजेश गौतम, निरीक्षक	1300/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	सुश्री भूमिका गौतम, कर सहायक	1000/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री राजेश पारीक, अधीक्षक	500/-

हिंदी टंकण प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री वरुण यादव, कर सहायक	1300/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री बिमल कुमार चौधरी, निरीक्षक	900/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री अमित कुमार जैन, निरीक्षक	700/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री महेश कुमार चौधरी , कर-सहायक	500/-

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री रामस्नेही जाट, निरीक्षक	1800/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री रोहिताश्व यादव, कर-सहायक	1400/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री महेश कुमार चौधरी	1100/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री प्रणव शर्मा, कर-सहायक	500 /-

अंत में श्री बी.एल. मीना, संयुक्त आयुक्त ने सभी को धन्यवाद देते हुए भविष्य में भी हिंदी में कार्य करने के लिए आग्रह किया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक द्वारा किया गया।

❑❑

राजभाषा शील्ड

आयुक्तालयों के अंतर्गत हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए आयुक्तालयों के अधीनस्थ संभागों को संबंधित कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। यह शील्ड आयुक्तालय जयपुर में सेवाकर संभाग-ई तथा सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में श्रीगंगानगर संभाग को प्रदान की गई।

हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना 2019-20 हेतु पुरस्कार
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय - जयपुर

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :-

1.	*प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री प्रदीप भूरिया, कर-सहायक	5000/-
		2. श्री मान सिंह गुर्जर, कर-सहायक	5000/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री हेमंत खोंलिया, कनिष्ठ लिपिक	3000/-
		2 श्री वरुण यादव, कर-सहायक	3000/-
		3. श्री महेश कुमार चौधरी, कर-सहायक	3000/-
3.	*तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री तिलक शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	2000/-
		2. सुश्री सुनीता सैनी, कर-सहायक	2000/-
		3. श्रीमती राजरानी शर्मा, कर-सहायक	2000/-

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय–जयपुर

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–

1.	*प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री शांता प्रकाश टेलर, कर–सहायक	5000/–
		2. श्री सुनील सुईवाल, कनिष्ठ लिपिक	5000/–
2.	*द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री राम गोपाल यादव, कनिष्ठ लिपिक	3000/–
		2. श्री फूल सिंह महावर, कर–सहायक	3000/–
		3. श्री संजय भामू, निरीक्षक	3000/–
3.	*तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री रमेश शर्मा, कर–सहायक	2000/–
		2. श्री रोहिताश्व कुमार यादव, कर–सहायक	2000/–
		3. श्री राम अवतार शर्मा, कार्यकारी सहायक	2000/–
		4. श्री लक्ष्मी नारायण मीणा, कर–सहायक	2000/–

सीमा शुल्क आयुक्तालय–जयपुर

हिंदी डिक्टेशन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार :–

1.	*प्रथम पुरस्कार (1)*	1. डॉ. बिजेन्द्र कुमार मीना, संयुक्त आयुक्त	5000/–

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–

1.	*प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री विरेन्द्र यादव, संचार सहायक	5000/–
		2. श्री संतोष कुमार मीणा, कर–सहायक	5000/–
2.	*द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री रमेश चन्द सोनी, कर–सहायक	3000/–
		2. श्री अमर सिंह , कर–सहायक	3000/–
		3. श्री रामरूप मीना, कार्यकारी सहायक	3000/–
3.	*तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री बलवंत सिंह नाथावत, कनिष्ठ लिपिक	2000/–
		2. श्री नेमीचन्द शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	2000/–
		3. श्री प्रहलाद कुमार मीना, सुपरवाईजर	2000/–
		4. श्री रमेश चन्द वर्मा, कर–सहायक	2000/–
		5. श्री योगेन्द्र कुमार मीना, कनिष्ठ लिपिक	2000/–

❑❑

राजभाषा समारोह – 2019

राजभाषा समारोह – 2019

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, आयुक्तालय जयपुर की रा.भा.का. समिति द्वारा वर्ष 2019-20 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त पुरस्कार

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर संभाग-एफ, जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड
प्राप्त करती हुई सुश्री प्रतीति गोयल, सहायक आयुक्त

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2019-20

सीमा शुल्क आयुक्तालय जयपुर की रा.भा.का. समिति द्वारा वर्ष 2019-20 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त पुरस्कार

सीमा शुल्क संभाग-बीकानेर की राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए डॉ. बी.के.मीना, संयुक्त आयुक्त

निवारक शाखा (मु.), जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री मुकुश कटारिया, संयुक्त आयुक्त

प्रशासन शाखा (मु.), जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए सुश्री सुनीता वर्मा, उपायुक्त

प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए निवारक/प्रशासन शाखा (मु.) जयपुर के अधीक्षकगण।

प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए निवारक शाखा (मु.) जयपुर के निरीक्षकगण।

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2019-20

प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. बी.के.मीना, संयुक्त आयुक्त

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2019-20

फ़ैसला जीवन का

अरुण कुमार देवनायक मिश्रा, निरीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

पति ने पत्नी को किसी बात पर तीन थप्पड़ जड़ दिए, पत्नी ने इसके जवाब में अपना सैंडिल पति की तरफ फेंका, सैंडिल का एक सिरा पति के सिर को छूता हुआ निकल गया।

मामला रफ़ा-दफ़ा हो भी जाता, लेकिन पति ने इसे अपनी तौहीन समझी, रिश्तेदारों ने मामला और पेचीदा बना दिया, न सिर्फ़ पेचीदा बल्कि संगीन, सब रिश्तेदारों ने इसे खानदान की नाक कटना कहा, यह भी कहा कि पति को सैंडिल मारने वाली औरत न वफ़ादार होती है न पतिव्रता।

लड़के ने लड़की के बारे में और लड़की ने लड़के के बारे में कई आपत्तिजनक बातें कही।

मुक़दमा दर्ज कराया गया। पति ने पत्नी की चरित्रहीनता का तो, पत्नी ने दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया। छह साल तक शादीशुदा जीवन बिताने और एक बच्ची के माता-पिता होने के बाद आज दोनों में तलाक हो गया।

पति-पत्नी के हाथों में तलाक के काग़ज़ों की प्रति थी।

दोनों चुप थे, दोनों शांत, दोनों निर्विकार।

मुक़दमा दो साल तक चला था।

अंत में वही हुआ जो सब चाहते थे यानी तलाक .....

यह महज़ इत्तेफ़ाक़ ही था कि दोनों पक्षों के रिश्तेदार एक ही टी-स्टॉल पर बैठे , कोल्ड ड्रिंक्स लिया।

यह भी महज़ इत्तेफ़ाक़ ही था कि तलाकशुदा पति-पत्नी एक ही मेज़ के आमने-सामने जा बैठे।

लकड़ी की बेंच और वो दोनों।

''कांग्रेच्यूलेशन .... आप जो चाहते थे वही हुआ ....'' स्त्री ने कहा।

''तुम्हें भी बधाई ..... तुमने भी तो तलाक दे कर जीत हासिल की ....'' पुरुष बोला।

''तलाक क्या जीत का प्रतीक होता है????'' स्त्री ने पूछा।

''तुम बताओ?''

पुरुष के पूछने पर स्त्री ने जवाब नहीं दिया, वो चुपचाप बैठी रही, फिर बोली, ''तुमने मुझे चरित्रहीन कहा था.... अच्छा हुआ.... अब तुम्हारा चरित्रहीन स्त्री से पीछा छूटा।''

''वो मेरी ग़लती थी, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था'' पुरुष बोला।

''मैंने बहुत मानसिक तनाव झेला है'', स्त्री की आवाज़ सपाट थी न दु:ख, न गुस्सा।

''जानता हूँ पुरुष इसी हथियार से स्त्री पर वार करता है, जो स्त्री के मन और आत्मा को लहू-लुहान कर देता है... तुम बहुत उज्ज्वल हो। मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी गंदी बात नहीं करनी चाहिए थी। मुझे बेहद अफ़सोस है,'' पुरुष ने कहा।

स्त्री चुप रही, उसने एक बार पुरुष को देखा।

कुछ पल चुप रहने के बाद पुरुष ने गहरी साँस ली और कहा, ''तुमने भी तो मुझे दहेज का लोभी कहा था।''

''गलत कहा था''.... पुरुष की ओर देखती हुई स्त्री बोली।

कुछ देर चुप रही फिर बोली, ''मैं कोई और आरोप लगाती लेकिन मैं नहीं...''

प्लास्टिक के कप में चाय आ गई।

स्त्री ने चाय उठाई, चाय ज़रा-सी छलकी। गर्म चाय स्त्री के हाथ पर गिरी।

स्सी... की आवाज़ निकली।

पुरुष के गले में उसी क्षण 'ओह' की आवाज़ निकली। स्त्री ने पुरुष को देखा। पुरुष स्त्री को देखे जा रहा था।

''तुम्हारा कमर दर्द कैसा है?''

''ऐसा ही है कभी वोवरॉन तो कभी कॉम्बीफ्लेम,'' स्त्री ने बात ख़त्म करनी चाही।

''तुम एक्सरसाइज़ भी तो नहीं करती।'' पुरुष ने कहा तो स्त्री फीकी हँसी हँस दी।

''तुम्हारे अस्थमा की क्या कंडीशन है... फिर अटैक तो नहीं पड़े????'' स्त्री ने पूछा।

''अस्थमा। डॉक्टर सूरी ने स्ट्रेस... मेंटल स्ट्रेस कम करने को कहा है,'' पुरुष ने जानकारी दी।

स्त्री ने पुरुष को देखा, देखती रही एकटक। जैसे पुरुष के चेहरे पर छपे तनाव को पढ़ रही हो।

''इनहेलर तो लेते रहते हो न?'' स्त्री ने पुरुष के चेहरे से नज़रें हटाईं और पूछा।

''हाँ, लेता रहता हूँ। आज लाना याद नहीं रहा,'' पुरुष ने कहा।

''तभी आज तुम्हारी साँस उखड़ी-उखड़ी-सी है,'' स्त्री ने हमदर्द लहजे में कहा।

''हाँ, कुछ इस वजह से और कुछ...'' पुरुष कहते-कहते रुक गया।

''कुछ... कुछ तनाव के कारण,'' स्त्री ने बात पूरी की।

पुरुष कुछ सोचता रहा, फिर बोला, ''तुम्हें चार लाख रुपए देने हैं और छह हज़ार रुपए महीना भी।''

''हाँ... फिर?'' स्त्री ने पूछा।

''वसुंधरा वाले फ्लैट की कीमत तो बीस लाख रुपए होगी???? मुझे सिर्फ चार लाख रुपए चाहिए....'' स्त्री ने स्पष्ट किया।

''बिटिया बड़ी होगी... सौ ख़र्च होते हैं....'' पुरुष ने कहा।

''वो तो तुम छह हज़ार रुपए महीना मुझे देते रहोगे,'' स्त्री बोली।

''हाँ, ज़रूर दूँगा।''

''चार लाख अगर तुम्हारे पास नहीं है तो मुझे मत देना,'' स्त्री ने कहा।

उसके स्वर में पुराने संबंधों की ग़र्द थी।

पुरुष उसका चेहरा देखता रहा....

कितनी सहृदय और कितनी सुंदर लग रही थी, सामने बैठी स्त्री, जो कभी उसकी पत्नी हुआ करती थी।

स्त्री पुरुष को देख रही थी और सोच रही थी, ''कितना सरल स्वभाव का है यह पुरुष, जो कभी उसका पति हुआ करता था। कितना प्यार करता था उससे...

एक बार हरिद्वार में जब वह गंगा में स्नान कर रही थी तो उसके हाथ से जंज़ीर छूट गई। फिर पागलों की तरह वह बचाने चला आया था। उसे ख़ुद तैरना नहीं आता था लाट साहब को और मुझे बचाने की कोशिशें करता रहा था... कितना अच्छा है... मैं ही खोट निकालती रही...''

पुरुष एकटक स्त्री को देख रहा था और सोच रहा था, ''कितना ध्यान रखती थी, स्टीम के लिए पानी उबाल कर जग में डाल देती। उसके लिए हमेशा इनहेलर ख़रीद कर लाती, सेरेटाइड ऑक्यूहेलर बहुत महँगा था।

हर महीने कंजूसी करती, पैसे बचाती, और ऑक्यूहेलर खरीद लाती। दूसरों की बीमारी की कौन परवाह करता है? ये करती थी परवाह! कभी ज़ाहिर भी नहीं होने देती थी।

कितनी संवेदना थी इसमें। मैं अपनी मर्दानगी के नशे में रहा। काश, जो मैं इसके जज़्बे को समझ पाता।''

दोनों चुप थे, बेहद चुप।

दुनिया भर की आवाज़ों से मुक्त हो कर, खामोश।

दोनों भीगी आँखों से एक दूसरे को देखते रहे....

''मुझे एक बात कहनी है,'' आवाज़ में झिझक थी।

''कहो,'' स्त्री ने सजल आँखों से उसे देखा।

''डरता हूँ,'' पुरुष ने कहा।

''डरो मत। हो सकता है तुम्हारी बात मेरे मन की बात हो,'' स्त्री ने कहा।

''तुम बहुत याद आती रही,'' पुरुष बोला।

''तुम भी,'' स्त्री ने कहा।

''मैं तुम्हें अब भी प्रेम करता हूँ।''

''मैं भी.'' स्त्री ने कहा।

दोनों की आँखें कुछ ज़्यादा ही सजल हो गई थीं।

दोनों की आवाज जज़्बाती और चेहरे मासूम।

''क्या हम दोनों जीवन को नया मोड़ नहीं दे सकते?'' पुरुष ने पूछा।

''कौन-सा मोड़?''

''हम फिर से साथ-साथ रहने लगें... एक साथ... पति-पत्नी बन कर... बहुत अच्छे दोस्त बन कर।''

''ये पेपर?'' स्त्री ने पूछा।

''फाड़ देते हैं।'' पुरुष ने कहा और अपने हाथ से तलाक के काग़ज़ात फाड़ दिए।

फिर स्त्री ने भी वही किया। दोनों उठ खड़े हुए। एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर मुस्कराए। दोनों पक्षों के रिश्तेदार हैरान-परेशान थे। दोनों पति-पत्नी हाथ में हाथ डाले घर की तरफ चले गए। घर जो सिर्फ़ और सिर्फ़ पति-पत्नी का था ।।

पति पत्नी में प्यार और तक़रार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, ज़रा सी बात पर कोई ऐसा फ़ैसला न लें कि आपको ज़िंदगी भर अफ़सोस हो।

❑❑

वो कौन थी?

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

रोहित सुबह-सुबह हड़बड़ी में तैयार होकर अपनी बाईक को किक लगा रहा था। उसे कार्यालय के काम से सवाई माधोपुर जाना था जिसके लिए उसे बस स्टैंड से बस पकड़नी थी। उसको पहले ही देर हो गयी थी। सर्दी के कारण बाइक स्टार्ट होने में समय ले रही थी, तभी उसके पास एक सुंदर युवती दौड़ती हुई आ खड़ी हुई और हाँफते हुए कहने लगी मुझे जल्दी से सिटी हॉस्पिटल पहुँचा दो। रोहित ने उसकी तरफ देखा, युवती की सुन्दर बड़ी आँखो में याचना नहीं बल्कि आदेश का भाव था। रोहित यह जानते हुए भी कि उसे बस पकड़ने में देर हो रही है, बिना किसी ना-नुकुर के उस युवती को बाइक पर अपने पीछे बैठा कर चल पड़ा। उसने उस युवती को हॉस्पिटल पहुँचा दिया, युवती के चले जाने के बाद रोहित जैसे किसी सपने से जागा, उसने पाया कि उसने उस युवती का नाम तक नहीं पूछा था और पूरे रास्ते किसी सम्मोहित अवस्था में बाइक चलाता रहा था। खैर, उसने अब अपनी बाइक बस स्टैंड की तरफ दौड़ाई, परंतु जैसा कि अपेक्षित था उसकी बस जा चुकी थी। रोहित थोड़ा परेशान सा, अगली बस के इंतज़ार में बस स्टैंड की बेंच पर आँखे बंद कर बैठ गया, उसकी आँखो के सामने बार-बार उस सुंदर युवती का चेहरा आ रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि बिना जान पहचान के, बिना सोचे-विचारे उसने युवती की बात कैसे मान ली थी! एक घंटे बाद दूसरी बस आई और वह उसमे सवाई माधोपुर के लिए रवाना हो गया।

क़रीबन दो घंटे की यात्रा के बाद बूँदी जिले में मेज़ नदी के पास पहुँचने पर भीड़ दिखाई दी, पता चला, एक बस नदी में गिर गयी है और बस के अंदर फँसे यात्रियों को निकालने का काम चल रहा है। रोहित भी अन्य यात्रियों के साथ बचाव कार्य मे शामिल हो गया, परंतु उस भयावह दुर्घटना में 28 यात्रियों में से केवल 4 यात्रियों को बचाया जा सका था। उफ्फ! कैसा भयानक दृश्य था! चारों ओर लाशें ही लाशें पड़ी थीं। रोहित के बस के ड्राइवर और यात्रियों की आपसी बातचीत से पता चला कि दुर्घटनाग्रस्त बस सवाई माधोपुर जा रही वही बस थी जो रोहित से छूट गयी थी। यह जानकर रोहित अंदर तक काँप गया, अगर वह बस उससे नहीं छूटती तो? उसके मस्तिष्क में प्रश्न कौंधने लगे कि क्या उस युवती का उससे मदद माँगना महज एक संयोग था या किसी दैवीय शक्ति ने उसको मौत के मुँह में जाने से रोक लिया था? असल में किसने किसकी मदद की? जो भी हो, यह प्रश्न 'वो कौन थी' उसे ज़िंदगी भर सोचने के लिए मजबूर करेगा।

❑❑

कोरोना काल

अरविन्द कुमार,
अधीक्षक,
सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

छाई है ख़ामोशी ये क़ब्रिस्तान में कैसी,
या जनाज़ा ये ख़ुद क़ब्रिस्तान का है।

क्या मर गयी हैवानियत अब तेरे शहर में,
या इंसानों से ख़ुदा ख़ुद अब ख़ौफ़ज़दा है।

बिलख गये हैं जनाजे भी चार काँधों को यहाँ,
ज़िंदगी की किसने बेरहमी से रौंदा है।

था ग़रूर जिन्हें कि मार सकता नहीं परिंदा भी पर यहाँ,
दीवारों पर उन घरों की परिदों का घरौंदा है।

हर शख़्स बनाता फिर रहा अपनों से दूरियाँ,
कोरोना की देन ये भी इक अजब दुनिया है।

घबराकर मौत से कब थमी है ज़िंदगी यहाँ,
रचने को नवनिर्माण फिर अब इंसान खड़ा है।

❑❑

टूटते रिश्ते और हम

निखिल भारद्वाज, भाई श्रीमती नीता शुक्ला, वरिष्ठ अनुवादक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

हाल ही में जापान की राजकुमारी ने अपने दिल की आवाज सुनी और एक साधारण युवक से शादी की। अपने प्रेम की खातिर जापान के नियमों के मुताबिक उन्हें राजघराने से अपना नाता तोड़ना पड़ा। विवाह के बाद अब वे खुद भी राजकुमारी से एक साधारण नागरिक बन गई है। कैम्ब्रिज के ड्यूक (Duke) और ब्रिटेन के शाही परिवार के राजकुमार विलियम ने एक साधारण परिवार की कैथरिन मिडलटन से विवाह किया (2011) और आज दुनियाभर में एक आदर्श जोड़े के रूप में पहचाने जाते हैं। स्वीडन की राजकुमारी विक्टोरिया ने स्वीडन के एक छोटे समुदाय से आने वाले डेनियल वसलिंग से शादी की (2010)। डेनियल कभी उनके पर्सनल ट्रेनर हुआ करते थे।

इस प्रकार की हाई प्रोफाइल, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से बेमेल लेकिन आपसी सामंजस्य में सफल विश्व के अनेकों जोड़ों की चर्चा के बीच हम अपने देश के एक हाई प्रोफ़ाइल जोड़े की बात करें तो स्थिति बिल्कुल विपरीत दिखाई देगी। यह किसी ने नहीं सोचा होगा कि 6 महीने में ही दोनों में तलाक की नौबत आ जायेगी। कहा जा सकता है कि सामाजिक और आर्थिक रूप से दोनों परिवार बेमेल नहीं थे। किन्तु फिर भी पति का कहना है कि हमारी जोड़ी बेमेल है और रिश्ते को ढोते रहने से अच्छा है उससे मुक्त हो जाना है।

हमारे देश में इस प्रकार का यह कोई पहला मामला नहीं है लेकिन मामला एक नामी परिवार से जुड़ा होने के कारण इसने न सिर्फ़ मीडिया बल्कि पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और शादी एवं तलाक़ को लेकर एक बहस भी छेड़ दी है।

भारत में लगभग 14 लाख लोग तलाकशुदा है। जो कुल आबादी का करीब 0.11% है और शादीशुदा आबादी का 0.24% हिस्सा है। चिंता की बात यह है कि भारत जैसे देश में भी यह आँकड़ा बढ़ता जा रहा है।

अगर हम तलाक़ के पीछे की वजह तलाशते हैं तो चिंता और बढ़ जाती है क्योंकि किसी को तलाक़ इसलिये चाहिये क्योंकि उसे अपने पार्टनर के पसीने की बदबू से एलर्जी थी तो किसी को अपने साथी की दोस्तों को बहुत अधिक उपहार देने की आदत से परेशानी थी। नागपुर के एक जोड़े ने हनीमून से लौटते ही तलाक़ की अर्जी इसलिये दे दी क्योंकि पति गीला तौलिया बिस्तर पर रखने की अपनी आदत नहीं बदल पा रहा था और पत्नी की सफ़ाई की आदत थी। एक दूसरे जोड़े ने हनीमून से वापस आते ही तलाक़ माँगा क्योंकि पति ने एक भी दिन होटल का खाना नहीं खिलाया। दरअसल सास ने घर का खाना साथ देकर बाहर के खाने के ना खाकर बीमारियों से बचने की नसीहत दी थी।

सही मायने में कहने को तलाक की अनेक वजह हो सकती हैं लेकिन समझने

वाली बात यह है कि केस कोई भी हो तलाक़ की केवल एक ही वजह होती है। ''एक दूसरे के साथ तालमेल ना बैठा पाना।'' एक दूसरे के साथ सामंजस्य न होना।

जी हाँ, रिश्ता कोई भी हो आपसी तालमेल से बहुत सी समस्याओं को हल करके एक दूसरे के साथ सामंजस्य बैठाया जा सकता है। लेकिन समझने वाला विषय यह है कि इसके लिये एक दूसरे की सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक पृष्ठभूमि का कोई महत्त्व नहीं होता, जैसा कि हमने पूर्व में कई बेमेल लेकिन सफल जोड़ियों के संदर्भ में देखा।

अगर दिलों में फ़ासले न हो तो सामाजिक, आर्थिक या फिर पारिवारिक पृष्ठभूमि की दूरियाँ कोई मायने नहीं रखतीं। लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि आज के भौतिकवादी दौर में जब हम लड़का या लड़की देखते है तो हमारी लिस्ट में लड़के या लड़की का आर्थिक पैकेज होता है। उनके संस्कार नहीं, उनकी शारीरिक सुन्दरता जैसे बाहरी विषय होते हैं। उनके आचरण और विचारों की शुद्धता नहीं। जिस रिश्ते की नींव बाहरी और भौतिक आकर्षणों पर रखी जाती है, वो एक हल्के से हवा के झोंके से ताश के पत्तों की तरह ढह जाती है। लेकिन जिन रिश्तों की नींव आत्मा और हृदय जैसे गम्भीर भावों पर

टिकी होती है वो आँधियों को भी अपने आगे झुकने पर मजबूर कर देते हैं।

इसलिये आज जब हमारा समाज उस दौर से गुज़र रहा है जब शादी से तलाक़ तक का सफ़र कुछ ही माह में तय कर लिया जाता हो तो ज़रूरत इस बात की है कि हमें बाहरी आकर्षणों से अधिक भीतरी गुणों, फ़ाइनेंशियल स्टेटस से अधिक संस्कारों के स्टेटस को, चेहरे की सुन्दरता से अधिक मन की सुन्दरता को तरजीह देनी चाहिये।

आधे या एक घंटे की मुलाक़ात या इंटरव्यू से आप यह पता नहीं लगा सकते कि सामने वाला इंसान कैसा होगा। उसी तरह एक या दो माह की लड़ाई से ये भी डिसाइड नहीं कर सकते की इंसान बेकार ही है अब तो तलाक़ लेना ही है।

बात करने से बड़े-बड़े देशों की सीमाओं के मसले हल हो जाते हैं तो क्या हम अपने आपसी संबंधों को सुधारने के लिये बात भी नहीं कर सकते। ऐसा नहीं हो सकता कि शादी के पहले दिन से ही आपसी मतभेद शुरू हो जायें। कुछ ऐसे पल भी होंगे जो जोड़े ने साथ में ख़ुशी से बिताये होंगे।

आपसी मतभेद होना भी स्वाभाविक है क्योंकि हर व्यक्ति का पालन पोषण, शिक्षा, परिस्थिति समान नहीं होती तो इसलिये जो भी डिसीजन लें सोच समझकर तथा रिश्ते की अहमियत को समझकर ही लें। क्योंकि कुछ ऐसे डिसीजनों पर ही हमारा और हमसे जुड़े लोगों का भविष्य निर्भर करता है।

सभी के अच्छे भविष्य एवं ख़ुशियों की कामना करता हूँ।

❑❑

दृढ़ निश्चय

प्रीति जैन, पत्नी श्री मनीष जैन, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

कुछ दिन पूर्व ही नई काम वाली बाई लगी थी..आज उसके परिवार का ब्यौरा लेने की गरज़ से सीमा ने पूछ लिया..

''कितने बच्चे है तुम्हारे,आदमी क्या काम करता है..?''

''दीदी ..तीन लड़की एक लड़का है ..तीनों बेटियों को ब्याह दिया ..बड़ी का तलाक हो गया..घर बैठी है, उसकी भी फिर शादी करनी है।''

'' और आदमी क्या करता है .?''

दारू पीता है दिनभर.. मारता-पीटता है...कई सालों से अलग रहता है .. मैं ही घर-घर काम कर बच्चों को पाल रही हूँ.. शादी का कर्ज़ा अलग चढ़ गया है दीदी ...!!''

अंजू नाम था उसका..उसकी बातों से आत्मविश्वास, क्रोध और लाचारी बख़ूबी झलक रही थी।

बड़ी हिम्मत की बात थी जो रोज़ सुबह 5 बजे घर से निकल बस से शहर जाकर शाम तक काम करती और शाम को घर में कपड़े सीने का काम अलग।

दूसरे दिन उसकी बहन को साथ काम पर आते देख फिर पूछ बैठी ..

''तुम्हारी बहन भी काम करती है?''

''हाँ दीदी, उसकी भी शादी हो गई है..हम दोनों ही 10 साल से काम पर आ रहे हैं।''

''पर उसका आदमी तो उसके साथ रहता होगा ना ..??''

वह तपाक से बोली..

''कहाँ दीदी उसका भी 'दारूखोरा''.. है, वो भी अलग रहता है।

हमारे समाज में ऐसा ही होता है.. हमारी तो क़िस्मत ही ख़राब है..आज मैं पढ़ी-लिखी होती तो घर-घर काम क्यूँ करती ..!!''

बेबसी .और क्रोध मे सुबक पड़ी थी वो ..जैसे किसी ने पुराने जख्मो को कुरेद दिया हो।

सोच में डूब गई थी सीमा..

''क्या चुपचाप सब सहन करना इनकी नियति है या ..इनकी कमरतोड़ मेहनत और अज्ञानता ..अपने आदमियों की मनमानी, चरित्रहीनता और निक्कम्मेपन के लिये ज़िम्मेदार है जो मज़दूरी का पैसा इनके हाथों में दे इन्हें ग़लत आदतों के लिये शह देती है ..अत्याचार और परिवार से विमुखता हेतु भी आवाज़ न उठा चुपचाप सब सहन करती जाती है..

एक दृढ़ निश्चय के साथ ही सीमा के हाथ टेबिल पर रक्खे कॉपी-पेंसिल की ओर बढ़ गये..आख़िर उसे शिक्षित कर बेबसी जो मिटानी थी।

❑❑

ऊटपटाँग शिक्षा और ऊटपटाँग शिक्षक

टी.आर. चौधरी, निजी सहायक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

शिक्षा और शिक्षक से मेरा तात्पर्य शिष्य द्वारा ग्रहण की गई शिक्षा जो परिवार, समाज, स्कूल, धार्मिक संस्थाओं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से प्राप्त होने वाली शिक्षा को माना गया है इसे कोई अपनी निजी ज़िंदगी से ना जोड़े।

हर बालक धरती है, उपवन है, खेत और खलिहान है
परन्तु बिन ज्ञान की गंग धारा सिंचन के सब कुछ सारहीन है।

बच्चों को शिक्षा, शिक्षक द्वारा दी जाती है पर नहीं चाहिए ऐसे शिक्षक और उनकी शिक्षा
क्योंकि इतिहास गवाह है कि शिक्षकों ने ही बच्चों के जीवन को इतिहास बना दिया है।
माना कि इन उगते हुए नौनिहालों का प्रभात है शिक्षक,
लेकिन अपने अर्थ तंत्र की नाव को मज़बूत करने के लिए शिष्य के प्रभात को डुबो दिया है।

घर, समाज, गाँव व देश को अमूल्य आशाएं थी
इन नन्हें से खड़े होते हुए स्तम्भों पर, उठती हुई आधारशिलाओं पर
लेकिन शिक्षक ने उन्हें आशा-निराशा, काला-गोरा, ग़रीब-अमीर,
होशियार-कमज़ोर रूपी मिट्टी डालकर ज़मींदोज कर दिया है
अपनी पल भर की ख़ुशी के लिए इन कोमल फूलों को बर्बाद कर दिया है।

अगर प्यार, प्रेम, मुहब्बत, लगाव शिष्यों से शिक्षक करते
तो यह मेहनत सिंचन द्वारा इश्क़ के उपवन लगा देते
हर जगह पेड़-पौधे, शिलाओं पर तस्वीर होती आपकी
लेकिन नहीं, क्योंकि कर्म से प्रधान माना है आपने अर्थ को।

तुम भूल चुके हो कर्तव्य पथ को, तुम भूल चुके हो संविधान को
तुम भूल चुके हो विधि-विधान को, क्योंकि अर्थ पूर्ण रूप से
कब्जे में कर चुका है तुम्हारे जीवन को।

अगर तुम बच्चे की मिट्टी में स्वतंत्र और गणतंत्र के बीज डालते
तो वे तुम्हारा खुले मन से स्वागत करते,
सत्कार करते, स्वतंत्र रूप से प्रश्न करते,
दिल से तुम्हें ज़िंदादिल कहते और तुम्हारे ग़लत फ़ैसले का गण के तंत्र से विरोध करते
परंतु आपने इनकी उठती व खिलखिलाती हुई भावनाओं को कुचल दिया।

आज मानव धर्म से श्रेष्ठ हो गया है संविधान, जिसकी आड़ में
आप हलवाई और वेटर दोनों बन गए
जिसमें सच की लकड़ी जलाकर, आपने झूठ, अधर्म, अनैकिता और भ्रष्टाचार को पकाया और परोसा है।

इन दृश्यों को देखकर दिल और दिमाग़ दोनों रूठ जाते हैं, रूह काँप उठती है
जब इन लहलहाती फ़सलों पर तुम्हारे कुठाराघात के ओले गिर जाते हैं
फिर भी शिष्य, सारा दोष नियति को मानकर
कर्त्तव्य-श्रेष्ठ के पथ पर नंगे पैर ही चल पड़ता है
दर्द क्या है, छाले व फफोले क्या है वह सब कुछ भूल जाता है
वह लड़खड़ाहट में कल का इंतज़ार किए बिना फिर से उठ खड़ा होता है एक स्तम्भ की भाँति
क्योंकि वह मानता है कि बंजर भूमि में बबूल जल्दी उग आते हैं

आज तुम्हारे बीज असहनशीलता, स्वार्थपूर्णता जैसे पनप रहे हैं
जातिवाद, धर्म अंधानुकरण, क्षेत्रवाद का ज़हर घोला है आपने
फिर कहते हो कि मानव नैतिकता को भूल चुका है, सब कुछ भूल चुका है, हिंसक हो रहा है।

दम घोटा आपने स्वयं के ज्ञान और शिष्यों के जीवन का
असामाजिक, असमानता का काला धुआँ उड़ाया है आपने
फिर पूछ रहे हो कि कठिनाई से क्यों आ रही है साँसें?

आपने ही कहा था कि एक बालक को शिक्षक जो चाहे बना सकता है
लेकिन आज के परिवेश को देख कर
कहता हूँ, नहीं चाहिए ऐसे शिक्षक और शिक्षा।

मैं भी मानता हूँ देश में हिंदू और मुस्लिम थे, लेकिन आज हिंदूमय और मुस्लिममय वातावरण तैयार हो रहा है
पहले चोरी-डकैती होना आम बात थी, लेकिन आज हत्या और बलात्कार आम हो रहे हैं।

हर मन-जन डरा हुआ है अपने ही कुसंस्कारों से
कुसंस्कारों को शहीद करना चाहता है लेकिन पहले पड़ोसियों के ठिकानों से
एक बूढ़ा शिक्षक एक नाबालिग़ लड़की को कामुकता के प्यार का पाठ पढ़ा रहा है
और घर वाले सोच रहे हैं कि मेरी बिटिया पर असीम कृपा है गुरु की।

लानत है, अनगिनत कारण और भी है, अतः नहीं चाहिए ऐसे शिक्षक और उनकी शिक्षा।

❑❑

बहनों की टोली

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, सीमा शुल्क, जयपुर

ज़िंदगी की नीम पे
जैसे मीठी निंबोली
मेरे घर के आँगन में
बहनों की टोली।

तपती दोपहरी में
जैसे ठंडे साये की खोली
मेरे घर के आँगन में
बहनों की टोली।

रब के दर से
जैसे भर गई ख़ाली झोली
मेरे घर के आँगन में
बहनों की टोली।

सुरीली बोलियों के ताबीज़ में
जैसे बँध गई दुआओं की मोली
मेरे घर के आँगन में
बहनों की टोली।

❑❑

नासिन

रामजी लाल मीना, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

नासिन की हम करें क्या बात।
छोड़ी इसने अपनी अलग ही पहचान।।

Induction Course भी बखूबी करवाये।
उठाया सभी ने इनका भरपूर लाभ।।

Faculty प्रतिभाएं भी अनेक बुलवाई।
किया सभी ने उनका मन से सम्मान।।

अनुशासन का भी अनूठा पाठ पढ़ाया।
स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा का सभी ने लाभ उठाया।।

कोरोना के समय में भी देखो।
इन्होंने अपना कर्म ही निभाया।।

नासिन की अब बस यही परिकल्पना।
शैक्षणिक, शारीरिक विकास में हो सभी दक्ष।। ❑❑

बाल चित्रकारी

अर्पित गहलावत
पुत्र सुश्री नीरू गहलावत
कार्यकारी सहायक

बाल चित्रकारी

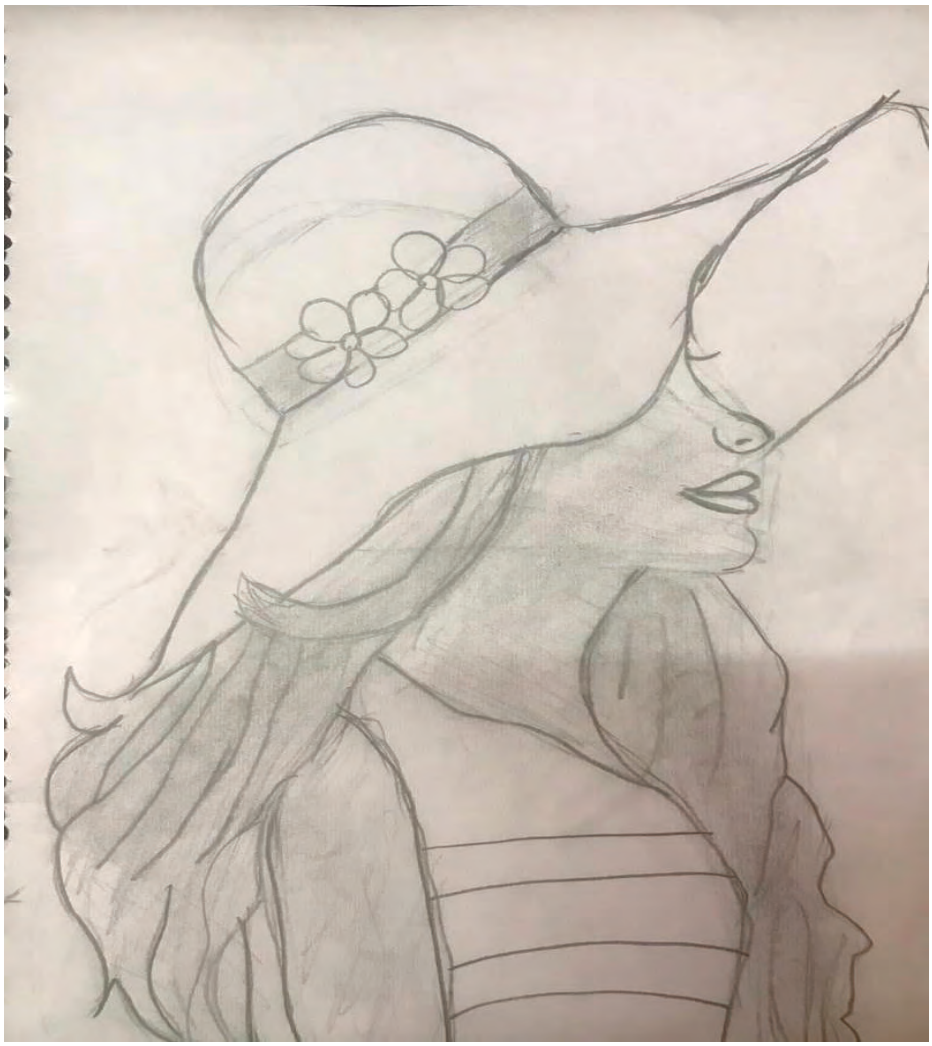

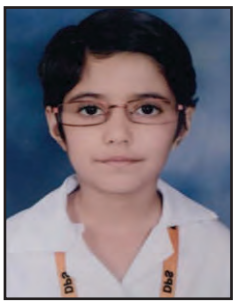

अवनी पायल
पुत्री श्री संदीप पायल, सहायक आयुक्त

मास्टर हृदयांश सिंघल
पुत्र सुश्री पारूल सिंघल, उपायुक्त

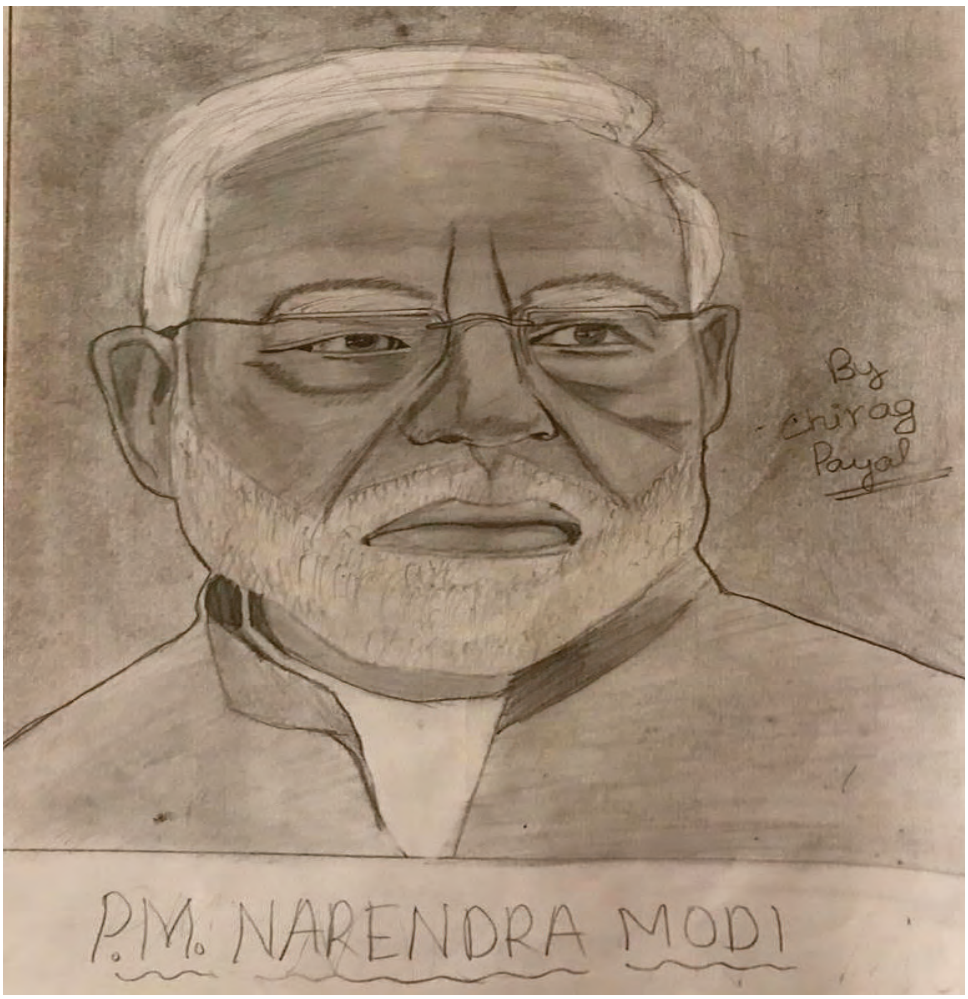

मास्टर चिराग पायल
भतीजा श्री संदीप पायल, सहायक आयुक्त

सिद्धि शुक्ला
भतीजी
सुश्री नीता शुक्ला वरिष्ठ अनुवादक

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार

श्री प्रमोद कुमार सिंह, मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर व उत्पाद शुल्क, जयपुर जोन को सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने पर राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त होने पर सीजीएसटी परिवार, राजस्थान आपको हार्दिक बधाइयां देता है।

विभागीय प्रतिभाएं

श्री मुकेश पाठक, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर विश्व सीमा शुल्क दिवस -2020 के अवसर पर केंद्रीय वित्त राज्य मंत्रीश्री अनुराग ठाकुर से मेरिट प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए।

पीटर्सबर्ग, रसिया में आयोजित 40+डबल्स टेबिल टेनिस प्रतियोगिता के उपविजेता रहे श्री जगदीश तंवर, अधीक्षक, सीजीएसटी आयुक्तालय, जयपुर

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर